वर्ष 48 अंक 4 अप्रैल 2021

₹15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 48 ● अंक 4 ● अप्रैल 2021 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध–सम्पादक

सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
24. क्या आप जानते हैं?
38. कभी न भूलो
41. आपके पत्र मिले
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

हँसती दुनिया

कविताएं

7. प्रार्थना
: गफूर 'स्नेही'

17. महान
: अमृत हरमन

21. शिशु गीत
: राजेंद्र निशेश

21. आसमान
: कीर्ति श्रीवास्तव

26. पर्यावरण के रक्षक
: महेन्द्र सिंह शेखावत

26. कितना घातक पोलीथीन
: रूपनारायण काबरा

33. रट्टू तोता
: कुसुम अग्रवाल

33. आ री कोयल
: डॉ. रामदुलार सिंह

40. आया मधुर बांसुरी वाला
: सुमेश निषाद

कहानियां

10. आत्म-शक्ति
: गौरीशंकर कुमार

11. बुलन्दी
: सीताराम गुप्ता

18. परियां और तालाब
: दिनेश 'दर्पण'

22. दीपक और आलोक
: राजेश अरोड़ा

25. अनोखा उपकार
: ईलू रानी

30. क्रोध का कीड़ा
: डॉ. परशुराम शुक्ल

39. अपना-अपना काम
: अमर सिंह शौल

46. कछुआ जीत गया
: जसविन्दर शर्मा

विशेष/लेख

8. दही में गुण बहुत हैं ...
: अनिता जैन

16. फालसा
: डॉ. विनोद गुप्ता

20. ट्री स्लॉथ
: वैदेही शर्मा

27. म्यूजियम ...
: किरण बाला

29. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

41. आविष्कार एवं आविष्कारक
: ऊषा सभरवाल

42. पेंगुइन का अनोखा संसार
: दीपांशु जैन

सबसे पहले

जीवन्त शिक्षक

मैं भी कुछ बनना चाहता हूँ, वह भी कुछ बनना चाहता है और देखा जाए तो हर व्यक्ति कुछ न कुछ बनना चाहता है। वह केवल बनना ही नहीं चाहता बल्कि दूसरे से अच्छा भी बनना चाहता है और फिर वह दूसरों को पीछे छोड़ देता है इस कारण वह अपने आपको ऊँचा समझने लग जाता है। गौरवान्वित होने की जगह अभिमान महसूस करने लगता है। आज यह अवस्था लगभग हर व्यक्ति की होती जा रही है जो किसी न किसी तरह ऊँचा उठ गया है या उसको ऊँचा उठा दिया गया है।

कुछ विद्यार्थी अपने जीवनयापन के लिए पढ़ाई करते हैं। डॉक्टर, शिक्षक, इंजीनियर, अधिकारी आदि पदों को प्राप्त भी कर लेते हैं। इस तरह वे जीवनयापन भी कर लेते हैं और साथ-साथ समाज की रक्षा और सेवा भी करते हैं। इस तरह कार्य करते-करते वे आगे बढ़ते रहते हैं और उनका नाम भी समाज में ऊँचा होता जाता है। उनके व्यवहार में परिवर्तन भी उसी तरह होता चला जाता है, जिसका उनको स्वयं भी पता नहीं चलता। अतः वे उसी व्यवहार को अपना आदर्श बना लेते हैं। यहीं से जीवन में सूक्ष्म अभिमान का आगमन हो जाता है जिससे वे अपनी क्षमता और सम्भावना को सीमित कर बैठते हैं।

हर व्यक्ति में असीमित क्षमताएं और सम्भावनाएं होती हैं। उनकी क्षमताओं को उजागर करने के लिए वह शिक्षक ही होता है जो यह कार्य कुशलता से कर सकता है। वह एक अच्छा इन्सान और मर्यादित व्यक्तित्व का स्वामी होता है। वह व्यक्ति अपने आचरण से एवं साहित्य की सहायता से सबका मार्गदर्शन करता है।

हमारे जीवन में भी एक महान जाग्रत पुरुष जिन्हें जीवन्त शिक्षक के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने ही इस 'हँसती दुनिया' का शुभारम्भ किया। इस पत्रिका के माध्यम से बच्चों को नैतिक शिक्षा के साथ-साथ समाज के हर प्राणी को यह सन्देश दिया कि व्यक्ति केवल व्यक्ति ही रह जाता है जब तक कि वह एक अच्छा इन्सान साबित नहीं होता। एक व्यक्ति को ईमानदार व्यक्तित्व का धनी होना, आदर्श नागरिक होना और वास्तविकता में एक अच्छा मानव बनना होता है।

वे कहते थे कि व्यक्ति जो हो सकता है वह नहीं हो पा रहा है, उसे कहीं और तरफ लगा दिया गया है। उसकी दिशा को बदलकर उसकी दशा को बदला जाए तो वह व्यक्ति से एक मानव बन जाएगा और मानवता के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देगा। ऐसी महान विभूति का नाम निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज है जिन्होंने अपने खून से मानवता को सींचा, सबका मार्गदर्शन किया और समाज की मनोदशा को परिवर्तित करके सुन्दरता से युक्त किया। उन्होंने सादा-शादियां, दहेज-प्रथा को बढ़ावा न देना, बच्चों को व्यावहारिक शिक्षा का ज्ञान, नशाबन्दी एवं स्त्रियों के सम्मान के लिए अनेकों कार्यक्रमों को भी आरम्भ किया इससे समाज में परिवर्तन लाने का सार्थक व साहसपूर्ण कार्य आगे बढ़ा।

हमारा सारा संसार और विशेषतः हँसती दुनिया का परिवार निरंकारी बाबा गुरबचन सिंह जी को शत्-शत् नमन करता है। जिनके द्वारा आज भी आपका सन्देश जन-जन तक कविताओं, कहानियों, लेखों, प्रेरक-प्रसंगों इत्यादि के द्वारा दिया जा रहा है। हम सदा उनके सुन्दर मार्गदर्शन के लिए अपना आभार व्यक्त करते हैं।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 231

जिस जोत दा अंश हैं बन्दे एस जोत नूं जाण ते सही।
जिस दियां दित्तियां दातां वरतें दाते नूं पहिचाण ते सही।
मालक ओहले रह के बन्दे जो कुझ वी कम करना एं।
सभ हराम है याद रखीं तूं पैणा तैनूं भरना एं।
जे साधु दी शरन न आयों दर दर धक्के खाएंगा।
कहे अवतार ज्ञान दे बाझों चौरासी विच जाएंगा।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह अनमोल मानव जीवन संसार की माया में उलझकर व्यर्थ करने के लिए नहीं मिला बल्कि यह परमपिता-परमात्मा के वास्तविक तत्व रूप को जानकर मुक्ति पाने के लिए मिला है। बाबा अवतार सिंह जी जोर देकर कह रहे हैं कि इन्सान तू जिस ज्योति अर्थात् पारब्रह्म-परमात्मा का अंश है इसको समय रहते जान ले। इस कार्य को प्राथमिकता देते हुए सबसे पहले कर ले। यह महत्वपूर्ण कार्य तत्काल करना जरूरी है, इसे टालना ठीक नहीं है। तू इस कार्य को भूलकर संसार की माया में खोया हुआ है। जिस प्रभु की कृपा से तुझे यह सुन्दर मानव तन मिला और साथ ही इसकी दी हुई संसार की तमाम दातें प्राप्त हुई तू अतिशीघ्र ऐसे दयालु प्रभु की पहचान तो कर ले।

बाबा अवतार सिंह जी यहाँ अत्यन्त विनम्र शब्दों में आग्रह कर रहे हैं ताकि किसी तरह इन्सान परमात्मा को जानकर अपना जीवन सफल कर ले। इसके साथ ही वे चेतावनी भी दे रहे हैं कि इन्सान इस मालिक-खालिक, इस परमात्मा से छुपकर जो भी काम तू कर रहा है वह हराम है। वह निषिद्ध है, वर्जित है, न करने योग्य है। जिस प्रकार निषिद्ध कार्यों को करने पर दंड का प्रावधान होता है, इसी तरह इससे छुपकर अर्थात परमात्मा की जानकारी प्राप्त न करके कार्य करना भी दंडनीय है जिसका भुगतान इन्सान को करना ही होता है।

बाबा अवतार सिंह जी इन्सान को जागरूक करते हुए कह रहे हैं कि जिस प्रभु का तू अंश है इसको न जानने पर तुझे जन्म-मरण के चक्कर में पड़कर परेशान होना पड़ेगा। जन्म-मरण के कुचक्र से बचने के लिए तू यहाँ-वहाँ मत भटक, तू व्यर्थ में इधर-उधर चक्कर मत खा, इसके लिए तू सच्चे साधु की शरण में आ जा। इससे तेरा दर-दर पर धक्के खाना समाप्त हो जाएगा। यदि तूने सद्गुरु की शरण में आकर ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त नहीं किया, अपने निज स्वरूप को नहीं जाना तो तेरा चौरासी लाख योनियों में आवागमन का चक्कर समाप्त होने वाला नहीं है। चौरासी लाख योनियों में पशु-पक्षी, कीट-पतंगे बनकर यातना भोगने से अच्छा है तू इस प्रभु के आश्रित होकर मुक्ति पद प्राप्त कर ले। इससे तेरा जीवन सहज, सरल और सुन्दर बन जाएगा। तू हर प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त होकर आनन्दित जीवन जी सकेगा।

अनमोल वचन

- गुरु के वचन की उल्लंघना (वचन न मानना) करना अपने खुशहाल जीवन को नीरसता और दुखों में धकेलना है।
- सन्त-महापुरुषों को कभी साधारण मनुष्य नहीं समझना चाहिए।
- सन्तों का जीवन व्याख्यानों पर नहीं बल्कि कर्मों पर आधारित होता है।
- हजारों काम छोड़कर एक काम हमेशा करना है। ईश्वर का ध्यान लगाना। जो व्यक्ति ईश्वर का नाम रोज जपता है अर्थात् परमात्मा को हर समय याद रखता है। वह हमेशा प्रसन्न रहता है।

  – बाबा गुरबचन सिंह जी
- शब्द जितने कम होंगे प्रार्थना उतनी ही उत्तम होती है। **– ल्यूथर**
- पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है।
- निरन्तर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता। **– रवीन्द्रनाथ टैगोर**
- अवगुण नाव की पेंदी के छेद के समान हैं जो चाहे छोटा हो बड़ा, एक दिन उसे डूबो ही देगा। **– कालिदास**
- अवसर उनकी मदद कभी नहीं करता जो अपनी मदद खुद नहीं करते।

  – सफोक्लीज
- अवसर बुद्धिमान के पक्ष में रहता है।

  – यूरीपिडीज
- न्याय करना केवल ईश्वर का काम है, आदमी का काम तो केवल दया करना है।

  – फ्रांसिस
- अतीत में जैसा भी कुछ कर्म किया गया है वह भविष्य में उसी रूप में उपस्थित होता है। **– महावीर स्वामी**
- समय और सागर की लहर किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। **– रिचर्ड ब्रेथकेट**
- नीच की नम्रता के प्रति सावधान रहो। अंकुश, धनुष, सांप और बिल्ली झुककर ही वार करते हैं। **– वाल्मीकि**
- प्रेम ही एक ऐसी बोली है, जिससे बिगड़े काम बन जाते हैं।
- जो व्यक्ति अपनों से बड़े लोगों का आदर व सम्मान करता है तथा उनकी हमेशा सेवा करता है वह व्यक्ति संसार में आदर व मान-सम्मान पाता है।
- जितना हो सके कम बोलो क्योंकि जो ज्यादा बोलता है वह दुनिया के बारे में ज्यादा ज्ञान प्राप्त नहीं करता और जो व्यक्ति जितना कम बोलेगा वही देश और दुनिया के बारे में जानेगा तथा आगे निरन्तर बढ़ता जायेगा।
- तेरी बुद्धि और हृदय को जो सत्य लगे, वही तेरा कर्तव्य है। **– गीता उपदेश**

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

प्रार्थना

ऐ मेरे मालिक मेरे ईश्वर,
मैं रहूं निर्भय अति निडर।

मुझको बुद्धि निर्मल दे,
मन जैसे खिला कमल।

डिगूं नहीं बाधाओं से,
डरूं नहीं उग्र हवाओं से।

तूफानों से न घबराऊं,
विपदाओं से पार पाऊं।

रहूं सदा मैं तेरा भक्त,
डरूं नहीं बना रहूं सख्त।

तेरे ही गुण गाऊं हरदम,
जीवन में अपनाऊं संयम।

विनम्र रहूं करूं याचना,
नित करूं मैं प्रार्थना।

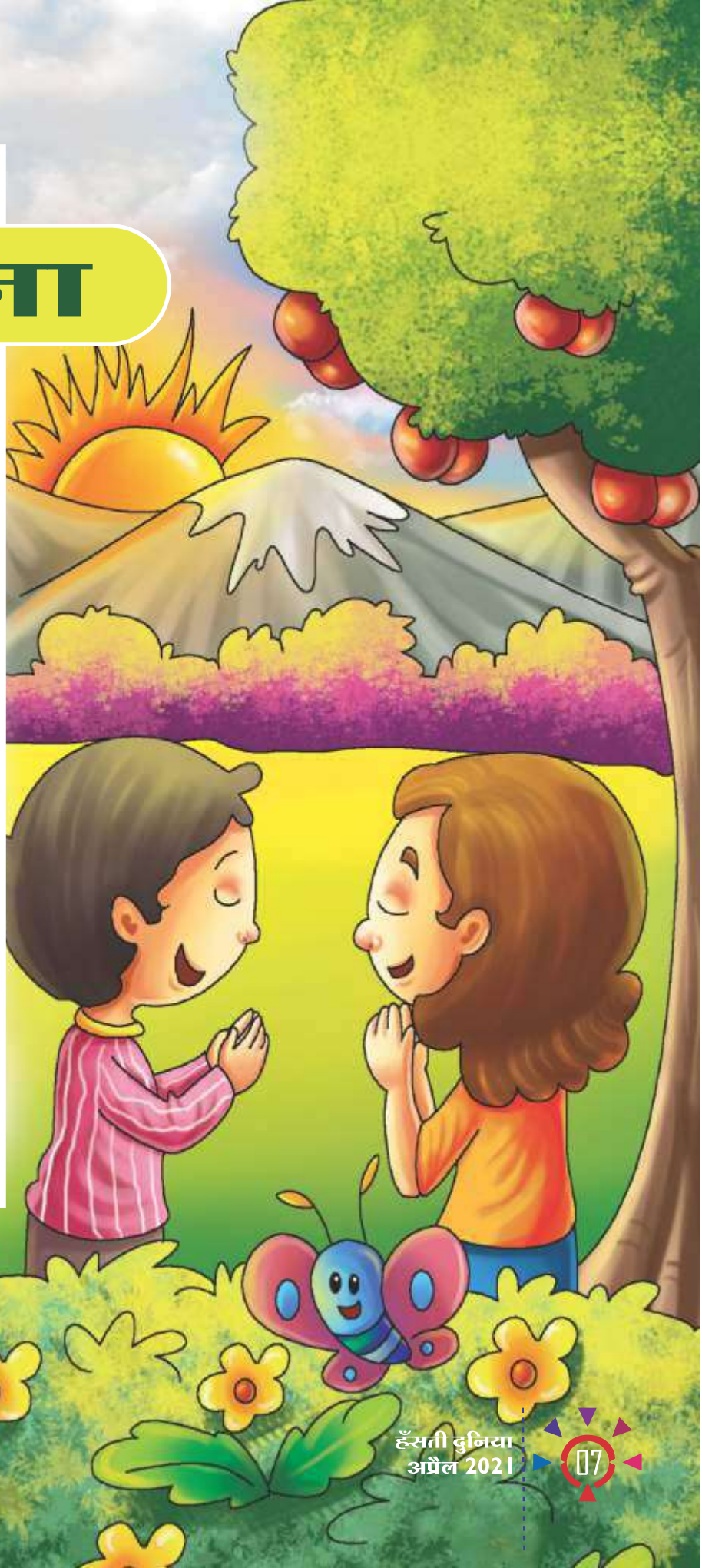

दही में गुण बहुत हैं...

दही एक पौष्टिक आहार है। इसकी तासीर शीतल होती है। आयुर्वेद के अनुसार दही रुचिकर, भूख बढ़ाने वाला, स्निग्धता प्रदान करने वाला, पाचन में सहायक, वातनाशक, विषनाशक, यकृत की शक्ति बढ़ाने वाला, बवासीर व पेट के रोगों के लिए फायदेमंद, हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देने वाला तथा आंतों की सफाई में सहायक होता है।

दही में दूध के सभी गुण मौजूद रहते हैं। दूध में मौजूद अन्य गुण जैसे चिकनाहट, विटामिन 'ए' और 'के', प्रोटीन, कैल्शियम, चूना, फास्फोरस आदि दही में भी विद्यमान रहते हैं।

दही रुचिकर, पाचक और शीतल होता है। एक शक्तिदायक खाद्य पदार्थ होने के बावजूद यह मोटापा नहीं बढ़ाता। दही के निम्न रासायनिक विश्लेषण से भी स्पष्ट होता है कि यह गुणों का भण्डार है–

वैज्ञानिकों के मतानुसार दही के रासायनिक संगठन में 90 प्रतिशत पानी तथा 10 प्रतिशत ठोस भाग होता है। ठोस हिस्से में चर्बी 4 प्रतिशत, लेक्टोज 3 प्रतिशत तथा कैल्शियम फास्फोरस, आयरन, विटामिन ए, बी और सी के भी पर्याप्त अंश पाए जाते हैं।

गर्मियों में दही की लस्सी अथवा छाछ एक बलवर्द्धक और तृप्तिदायक शीतलपेय है। छाछ में दूध की अपेक्षा वसा कम अवश्य होती है किन्तु छाछ में दही की अपेक्षा अधिक गुण पाए जाते हैं। दही और छाछ के विभिन्न रोग-निवारक गुणों के कारण ही आयुर्वेद और यूनानी उपचार पद्धति में इससे मंदाग्नि, आंतों की कमजोरी, पेचिश तथा दस्त का उपचार किया जाता है।

हमारा शरीर दही का 91 प्रतिशत भाग एक घंटे में सहजता से पचा लेता है। इस तरह यह अत्यन्त पाचक है। दही शरीर की फालतू चर्बी को कम करने में भी मददगार साबित होता है।

दही के नियमित सेवन से व्यक्ति दीर्घायु होता है। रूस के जार्जिया प्रदेश की 50 लाख की आबादी में 80 हजार से अधिक लोग सौ वर्ष की उम्र में भी स्वस्थ व प्रसन्नचित हैं। बुल्गारिया में भी सैंकड़ों लोग 100 वर्ष की आयु में भी पूर्णतया स्वस्थ हैं। इसके पीछे कारण यह है कि वे दही का भरपूर उपयोग करते हैं। दोनों समय भोजन में दही अनिवार्य रूप से होता है।

दही दिल के लिए भी फायदेमन्द है। अमेरिका के प्रो. जार्ज बी. मान ने अनेक शोधों के बाद निष्कर्ष निकाला है कि दही में एक ऐसा तत्व

मौजूद होता है जो रक्त में कोलेस्ट्रॉल को कम करके दिल के दौरे को रोकता है। कोलेस्ट्रॉल एक चर्बी युक्त पदार्थ है जो शिराओं को अवरुद्ध कर देता है, नतीजन हृदय रोग हो जाता है। खाने के बाद दही कोलेस्ट्रॉल की संरचना में गिरावट लाता है। हृदय रोगियों को प्रो. जार्ज की एक ही राय है कि उन्हें दही बहुत अधिक खाना चाहिए।

पाचन-क्रिया को सुचारु बनाने में दही की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक आंतों के निचले हिस्से में फ्लोरा नामक बैक्टीरिया होते है। इन बैक्टीरियाओं का भोजन पचाने में बहुत बड़ा योगदान होता है। बदपरहेजी अथवा एलोपैथी की दवाओं का अधिक सेवन करने से इन बैक्टीरिया की सक्रियता में कमी आ जाती है। इससे भोजन का पाचन सक्रिय रूप से नहीं हो पाता। दही में यह गुण होता है कि वह इस बैक्टीरिया को पुनः सक्रिय बना देता है जिससे पाचन सही तरह से चलने लगता है।

दही को बहुत प्राचीनकाल से भारत में बाल धोने के लिए भी उपयोग में लिया जाता रहा है। इससे केश धोने से केश मुलायम, घने, काले व लम्बे होते हैं। बालों की जड़ों तक दही रगड़कर नहाना चाहिए।

दही की ठंडी मलाई पलकों पर लेप करने से गर्मी व जलन कम होने लगेगी। कब्जियत से छुटकारा पाने के लिए दही की छाछ रोजना नियमित रूप से चुटकी भर अजवाइन डालकर पिएं।

दही की इतनी उपयोगिता को देखते हुए आज ही दही का नियमित सेवन प्रारम्भ कर दें।

प्रस्तुति : अनिता जैन

'हँसती दुनिया' पढ़ते जायें।
जीवन में आगे बढ़ते जायें।।

बाल कथा : गौरीशंकर कुमार

आत्म-शक्ति

एक किसान के पास एक गाय और एक घोड़ा था। वे दोनों एक साथ जंगल में चरते थे। किसान के पड़ोस में एक धोबी रहता था। धोबी के पास एक गधा और एक बकरी थी। धोबी भी उन्हें उसी जंगल में चराने ले जाता था। एक साथ चरने से चारों पशुओं की दोस्ती हो गयी। वे साथ ही जंगल में आते और शाम को एक साथ ही जंगल से घर जाते थे।

उस जंगल में एक खरगोश भी रहता था। खरगोश ने चारों पशुओं की मित्रता देखी तो सोचने लगा– 'मेरी भी इनसे मित्रता हो जाये तो बड़ा अच्छा हो। इतने बड़े पशुओं से मित्रता होने पर कोई कुत्ता मुझे तंग नहीं करेगा।'

खरगोश उन चारों के पास बार-बार आने लगा। वह उनके सामने उछलता, कूदता और उनके साथ ही हरी-हरी दूब खाता था। धीरे-धीरे चारों के साथ उसकी मित्रता हो गयी। अब खरगोश बड़ा खुश हुआ। उसने समझा कि कुत्तों का भय दूर हो गया।

एक दिन एक कुत्ता उस जंगल में आया और खरगोश के पीछे दौड़ा। खरगोश भागा-भागा गाय के पास गया और बोला– 'गोमाता! यह कुत्ता बहुत दुष्ट है। यह मुझे मारने आया है। तुम इसे अपने सींगों से मारो।'

गाय ने कहा– 'भाई खरगोश! तुम बहुत देरी से आये। मेरे घर लौटने का समय हो गया है। मेरा

बछड़ा भूखा होगा और बार-बार मुझे पुकारता होगा। मुझे घर जाने की जल्दी है। तुम घोड़े के पास जाओ।'

खरगोश दौड़ता हुआ घोड़े के पास गया और बोला– 'भाई घोड़े! मैं तुम्हारा मित्र हूँ। हम दोनों साथ ही यहाँ चरते हैं। आज यह दुष्ट कुत्ता मेरे पीछे पड़ा है। तुम मुझे पीठ पर बैठाकर दूर ले चलो।'

घोड़े ने कहा– 'तुम्हारी बात तो ठीक है, किन्तु मुझे बैठना आता नहीं। मैं तो खड़े-खड़े सोता हूँ। तुम मेरी पीठ पर चढ़ोगे कैसे? आजकल मेरे खुर भी बढ़ गये हैं। मैं न तो दौड़ सकता हूँ और न पैर फटकार सकता हूँ।'

घोड़े के पास से निराश होकर खरगोश गधे के पास गया। उसने गधे से कहा– 'मित्र गधे! तुम इस पापी कुत्ते पर एक दुलत्ती झाड़ दो तो मेरे प्राण बच जायें।'

गधा बोला– 'मैं नित्य गाय और घोड़े के साथ घर लौटता हूँ। वे दोनों जा रहे हैं। यदि मैं उनके साथ न जाकर पीछे रह जाऊँ तो मेरा स्वामी धोबी डंडा लेकर दौड़ा आयेगा और पीटते-पीटते मेरा कचूमर निकाल देगा। मैं अब यहाँ ठहर नहीं सकता।'

अन्त में खरगोश बकरी के पास गया। बकरी ने उसे देखते ही कहा– 'खरगोश भाई! कृपा करके इधर मत आओ। तुम्हारे पीछे कुत्ता दौड़ता आ रहा है। मैं उससे बहुत डरती हूँ।'

अब खरगोश ने सोचा– 'मुझे अपनी बुद्धि, आत्मबल और योग्यता पर विश्वास करना चाहिए।'

सब ओर से निराश होकर खरगोश वहाँ से भागा। भागते-भागते वह जाकर एक झाड़ी में छिप गया। कुत्ते ने बहुत ढूंढ़ा किंतु उसे खरगोश का पता नहीं चला।

प्रेरक-प्रसंग : सीताराम गुप्ता

बुलन्दी

एक बार उक़ाब जब उड़ने लगा तो एक मकड़ी उसके पैरों से चिपक गई और वह भी उक़ाब के साथ-साथ पहाड़ की चोटी तक जा पहुँची। वहाँ पहुँचकर वह उक़ाब के पैरों को छोड़कर दूर एक चट्टान पर जा बैठी और कहने लगी– 'देखो मैं कितनी ऊँचाई पर पहुँच गई हूँ?'

इतने में हवा का एक तेज झोंका आया। उक़ाब बड़े मज़े से वहाँ बैठा रहा पर मकड़ी एक ही झटके में चट्टान से गिरकर हवा में उड़ते हुए वापस ज़मीन पर जा पहुँची।

मकड़ी की तरह जो लोग बिना अपनी योग्यता और सामर्थ्य के किसी के सहारे ऊँचाई पर पहुँच जाते हैं परन्तु एक हल्के से आघात से ही वे फौरन नीचे आ जाते हैं। बुलन्दी पर पहुँचना तो आसान है लेकिन वहाँ ठहरे रहना मुश्किल है। ऊँचाई पर केवल वही लोग टिक पाते हैं जो अपनी योग्यता और मेहनत से मुकाम हासिल करते हैं।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
-अजय कालड़ा

इस बहादुर बच्चे का नाम था वीर। वह अपने माता-पिता के साथ शहर में रहता था। वह न तो अन्य बच्चों की तरह अंधेरे से डरता था और न ही किसी और चीज़ से।
एक दिन की बात है उसकी दादी की तबीयत अचानक बहुत खराब हो गई और उसके मम्मी-पापा को गाँव जाना पड़ा।
उसकी वार्षिक परीक्षा नज़दीक थी इसलिए वह उनके साथ नहीं जा सकता था। घर का काम भी वह खुद ही करता था।

रात को जब वीर सोने लगा तो उसे लगा जैसे कि छत पर कोई है। वह जानता था कि छत के रास्ते से घर के अन्दर घुसना चोरों के लिए कोई मुश्किल काम नहीं था।
उसने अपना दिमाग दौड़ाया और खतरे से निपटने के लिए झटपट कुछ तैयारी कर ली।
वह रसोईघर में गया और वहाँ से थैली में मिर्च पाऊडर भर लाया तथा सीढ़ियों के नीचे छिपकर बैठ गया। बस फिर क्या था? जैसे ही चोर सीढ़ियों से उतर कर नीचे पहुँचे, उसने झट से हाथ में पकड़ी हुई लाल मिर्च चोरों की आँखों में डाल दीं। चोर एकाएक कुछ समझ ही नहीं पाए।

वाह! इतना होशियार और तेज़ था वीर!
हाँ! बेटा, चोर तो दर्द से छटपटाने लगे और वीर ने झटपट पुलिस को फ़ोन कर दिया।
और तो और, पुलिस के आने तक उसने चोरों को कमरे में बंद कर दिया ताकि वे भागने की कोशिश न कर पाएं।
वाह! दादा जी, इसका मतलब अगर हम भी अपने मन के डर को जीत कर समझदारी से काम लें तो बहादुरी के कारनामे दिखाकर इनाम जीत सकते हैं।
बिल्कुल बच्चों।

जानकारीपूर्ण आलेख : डॉ. विनोद गुप्ता

फालसा
छोटे फल के बड़े गुण

प्रकृति ने धरती पर तरह-तरह के फल पैदा किए हैं जिनमें से एक है फालसा। आकार में भले ही यह छोटा हो लेकिन इसमें बड़े गुण हैं। अन्य फलों की तुलना में बाजार में यह कम दिखाई देता है। यही कारण है कि यह महंगा होता है।

खाने में रुचिकर और स्वादिष्ट तो है ही, औषधीय गुणों से भरपूर भी है फालसा। इसमें सभी आवश्यक पोषक तत्व, खनिज, विटामिन आदि पाए जाते हैं जो कि हमें स्वस्थ रहने के लिए जरूरी हैं।

हड्डियों की मजबूती के लिए फालसे का सेवन अत्यन्त लाभदायक है क्योंकि इसमें प्रचुर मात्रा में कैल्शियम और फास्फोरस होता है।

विटामिन सी होने की वजह से यह स्कर्वी रोग से बचाता है तथा शरीर में घाव भरने में मददगार होता है। मसूढ़ों की सेहत के लिए भी फालसा लाभदायक है। इसी प्रकार सर्दी-जुकाम से भी राहत देता है।

फालसा में एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं जिससे हमारी रोगप्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। परिणामस्वरूप रोगों से बचाव होता है।

फालसा में फाइबर यानी रेशे होते हैं जो कब्ज में निजात दिलाते हैं। इसके रेशे आंतों में फंसे मल को भी बाहर निकाल देते हैं। जिससे कब्जजनित रोगों से बचाव होता है।

गर्मी के मौसम में उपलब्ध इस फल में जल की मात्रा होती है जो कि प्यास बुझाती है और डिहाइड्रेशन से बचाती है। इससे लू का खतरा कम हो जाता है।

फालसा में लौह तत्व होता है जो कि रक्त निर्माण में सहायक होता है। यही नहीं इसके सेवन से रक्त शुद्ध भी होता है।

पेट संबंधी रोग जैसे अपच, गैस, आफरा आना, एसिडिटी आदि में फालसे का जूस गुणकारी है।

फालसा रक्तचाप को सामान्य बनाए रखने में मददगार है। इसमें पोटेशियम भी होता है जो कि दिल की सेहत के लिए अच्छा है। जब ब्लडप्रेशर और कोलेस्ट्राल नियंत्रण में रहेंगे तो दिल स्वस्थ रहेगा।

यदि भोजन के प्रति अरूचि हो तो फालसे में सेंधा नमक मिलाकर सेवन करने से भूख लगती है।

यदि मुँह में छाले हो गए हों तो इसके पेड़ की छाल को उबालकर छने हुए पानी से कुल्ला करें।

कविता : अमृत हरमन

महान

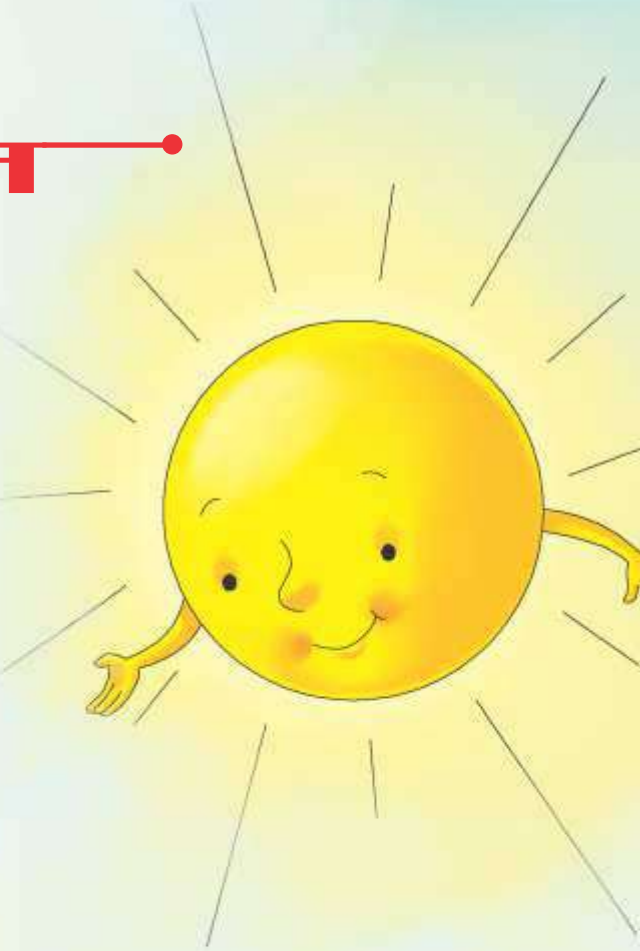

इक दिन बोला मानव सूरज से, तुम कितने महान हो,
सबको रोशनी ऊर्जा देते, इस सृष्टि के प्राण हो।
एक कमी है लेकिन तुम में, गर्म बहुत हो जाते हो,
गर्मी के मौसम में पसीने, से सबको नहलाते हो।

फिर बोला मानव सागर से, तुम कितने महान हो,
बादल भी जल लेते तुम से, विशाल हो जल की खान हो।
लेकिन बस एक कमी है तुम में, बाकी तो गुण हैं सारे,
जल तुम्हारा पी नहीं सकते, तुम तो हो बिल्कुल खारे।

फिर बोला मानव हिमालय से, तुम तो बड़े महान हो।
अचल, अडोल, विशाल हो कितने, धरा के मुकुट समान हो।
हाँ बस एक कमी है तुम में, बर्फ से सारे ढके हो तुम,
कोई पेड़ न पौधा उगता, बेजान से बिल्कुल पड़े हो तुम।

फिर तीनों बोले हे मानव, तुम तो प्रभु की संतान हो,
अवगुण देखना छोड़ दो गर तो, सबसे तुम्हीं महान हो।

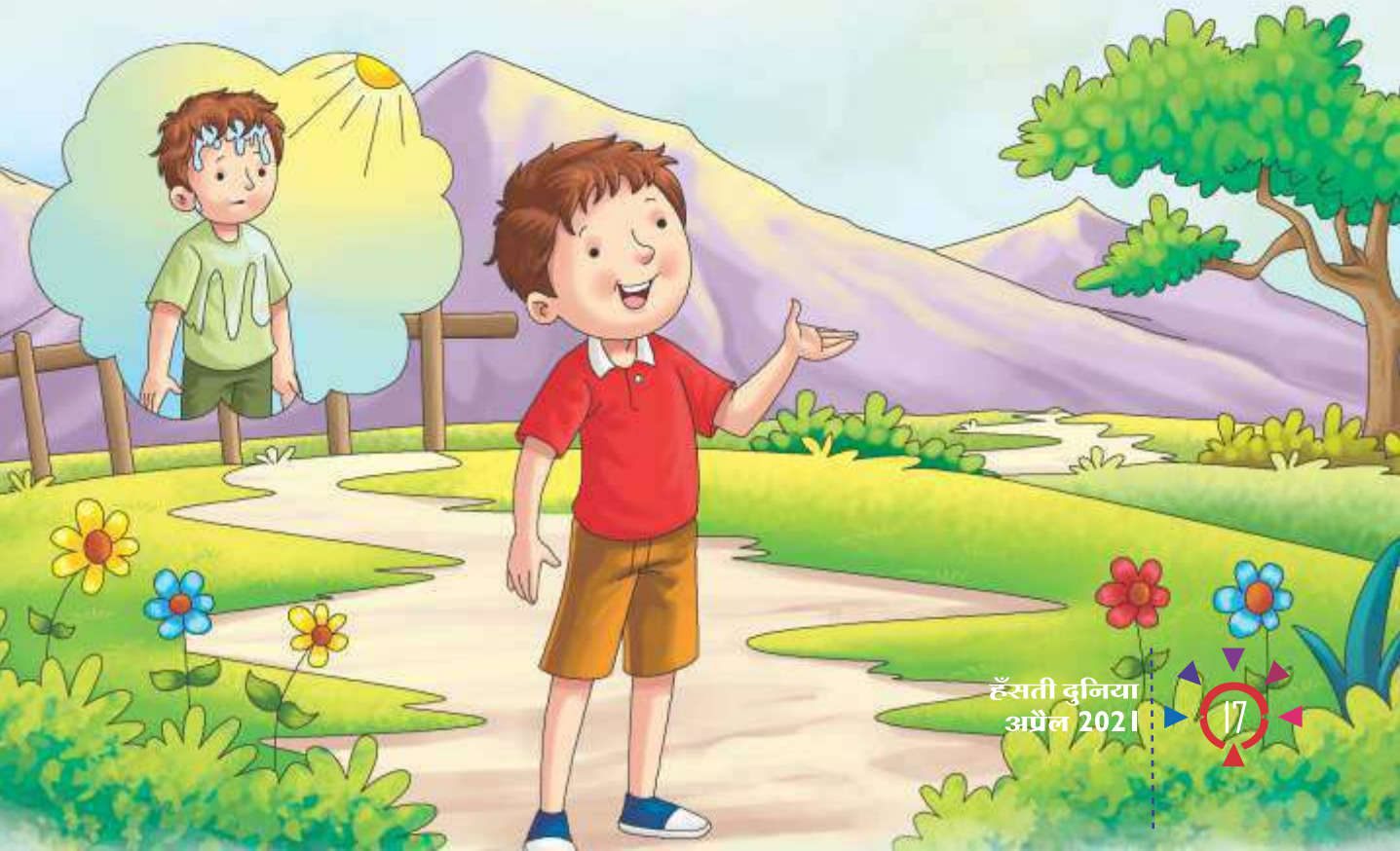

चीनी लोककथा : दिनेश 'दर्पण'

परियां और तालाब

बहुत पुरानी बात है। स्वर्ग की झील में पांच सुन्दर परियां रहती थीं। रोज-रोज एक जैसी दिनचर्या व क्रियाकलापों की जिन्दगी से ऊबकर कभी-कभी उनका मन पृथ्वी पर आने को करता था। पर उनकी रानी परी का उन पर नियंत्रण था। इसलिए वे चाहकर भी धरती पर नहीं आ सकती थीं।

एक दिन जब उनकी रानी गहरी नींद में सो रही थी। तभी पांचों परियों ने पांच कमल के रूप में अपना रूप बदल दिया और झील से निकलकर बाहर आ गई। फिर वे सफेद बादलों के साथ उड़ते हुए पृथ्वी पर नीचे आ गई। धरती पर पहुँचकर पांचों परियां एक-दूसरे के हाथों में हाथ डालकर नाचने लगीं। प्रत्येक की छवि अपने आप में निराली थी।

परियों ने पहली बार पृथ्वी पर अपने कदम रखे थे। इसलिए उन्हें यहाँ का नज़ारा काफी लुभावना लग रहा था। उन्हें यहाँ की हर चीज बड़ी प्यारी लग रही थी। वे घूम-घूमकर धरती के दृश्यों का आनन्द ले रही थीं। तभी स्वर्ग से सुनहरी घंटी बजी। इस घंटी का तात्पर्य था कि स्वर्ग का द्वार बन्द होने वाला था। घंटी की आवाज सुनते ही जाने की इच्छा न होने पर भी विवश होकर पांचों परियां उड़कर वापस स्वर्गलोक में चली गई।

इसके बाद तो अक्सर ही वे कमल का रूप धारण करके पृथ्वी पर आने लगीं। कभी-कभी वे पांच खिलती कुमुदिनी के फूल का रूप भी धारण कर लेतीं। इस प्रकार उनका रोज का ही सिलसिला हो गया। एक बार पृथ्वी पर लम्बे समय तक वर्षा नहीं हुई। पृथ्वी के सारे जीव-जन्तु परेशान हो उठे। पृथ्वी की ऐसी हालत देखकर पांचों परियां बड़ी दुखी हुई। उन्होंने आपस में तय किया कि स्वर्ग की झील से एक-एक कलश जादुई जल को चुराकर पृथ्वी पर ले आयेंगी और पृथ्वीवासियों के जीवन की रक्षा करेंगी।

एक सुबह पांचों परियां बादलों के संग पांच सुनहरे कलश में जादुई जल लेकर पृथ्वी की ओर चल पड़ीं। तभी एक भयंकर गर्जना हुई। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। उनके पीछे-पीछे झील की रानी अपने सैनिकों के साथ उन्हें पकड़ने आ रही थी। यह देखकर परियां डर गई। उन्होंने जल्दी से कमल के रूप में स्वयं को बदल डाला और

कमल की बड़ी-बड़ी पत्तियों के बीच जाकर छिप गईं।

रानी ने उन्हें ऐसा करते देख लिया। वे जोर से चीखीं-चिल्लाईं तो परियों के बदले रूप कमल के फूल में से बाहर आ गये। रानी ने अपने सैनिकों को आदेश दिया– ले चलो इन्हें पकड़कर और इन्हें स्वर्ग के कैदखाने में ले जाकर डाल दो।

पांचों परियां रानी के सामने बार-बार गिड़गिड़ाने लगीं कि हमें पृथ्वी पर ही हमेशा के लिए रहने की अनुमति दे दीजिये। रानी ने उनकी बात मानने से इंकार कर दिया। उसने सैनिकों से कहा– इनसे सुनहरे कलश व जादुई जल भी जब्त कर लो।

पर इससे पहले कि सैनिक सुनहरे कलश जो जादुई जल से भरे थे। उन्हें जब्त करते, पांचों परियां दौड़कर भागीं। सैनिक भी उनके पीछे भागे। पर यह क्या...? पांचों परियों ने जादुई जल से भरे उन कलशों को पृथ्वी पर फेंक दिया। जैसे ही पांचों कलशों का जल पृथ्वी पर गिरा, तत्काल वहाँ पांच स्वच्छ व मीठे जल वाले तालाब बन गये और कलश टूट-फूट गये।

यह सब देखकर रानी आग-बबूला हो गई। उसने गुस्से में शाप दिया– ''जाओ, तुम सब पृथ्वी पर ही तालाब बन जाओ। अब तुम लोगों के लिए स्वर्ग में कोई जगह नहीं है।'' अगले ही क्षण, पांचों परियां पांच तालाब के रूप में बदल गईं और पृथ्वी पर आ गईं। पांचों तालाबों में कमल के फूल खिल गये। तब से लेकर आज तक पांचों परियां पांच तालाब के रूप में पृथ्वी पर आज तक विराजमान हैं और पृथ्वीवासियों के अच्छे जीवन के लिए लगातार कार्य कर रही हैं।

जीव जगत : वैदेही शर्मा

नन्हा विचित्र जानवर

ट्री स्लॉथ

बच्चो, तुमने चिड़ियाघर में देश-विदेश के बहुत से जीव-जन्तु देखें होंगे लेकिन दक्षिण अमेरिका के घने जंगलों में पेड़ों पर रहने वाला स्लॉथ जानवर कभी नहीं देखा होगा। पेड़ों पर रहने के कारण इस छोटे जानवर को 'ट्री स्लॉथ' कहा जाता है।

स्लॉथ इतना आलसी होता है कि पेड़ों पर एक सप्ताह तक सोता रहता है। बारिश के दिनों में स्लॉथ के शरीर पर काई जम जाती है। तब पेड़ की ऊँची शाखा पर चिपककर सोते स्लॉथ का कुछ पता नहीं चलता। काई के कारण स्लॉथ का रंग पेड़ की शाखा से मिल जाता है।

दक्षिण अमेरिका के घने जंगलों में जहाँ एक महीने तक बारिश होती रहती है। स्लॉथ पेड़ों पर चढ़े सोते रहते हैं। स्लॉथ पेड़ों से रात के समय ही कभी-कभी उतरते हैं और कंदमूल खाकर फिर पेड़ पर चढ़ जाता है। स्लॉथ एक बार में इतना खा लेता है कि फिर उसको पेड़ से एक सप्ताह तक उतरना नहीं पड़ता।

स्लॉथ जमीन पर ज्यादा चल नहीं सकता। स्लॉथ घिसटता हुआ चलता है लेकिन जमीन पर कोई खतरा देखकर स्लॉथ पानी से भरे किसी गड्ढे में कूद जाता है। स्लॉथ पानी में बहुत देर तक तैरता रहता है। यही नहीं, डुबकी लगाकर बहुत देर तक पानी में छिपा रहता है।

अपनी चारों टांगों से पेड़ की ऊँची शाखा पर चिपका स्लॉथ दिनभर सोता रहता है। स्लॉथ किसी भालू के छोटे बच्चे की तरह दिखाई देता है। स्लॉथ के छोटे-छोटे भूरे रंग के बाल, गोल सिर और छोटी-सी पूंछ होती है। लेकिन स्लॉथ का मुंह सपाट होता है। स्लॉथ का शरीर दो फुट से बड़ा नहीं होता।

दिलचस्प सच

दुनिया में इस समय करीब 6500 भाषाएं बोली जाती हैं। हालांकि इनमें से 2000 भाषाएं ऐसी भी हैं जिनके बोलने वाले सिर्फ 1000 लोग ही हैं।

क्या आपको पता है कि सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा कौन सी है? अगर आपका जवाब अंग्रेजी है तो हम बता दें कि सबसे ज्यादा बोली जानी वाली भाषा मंडारिन चाइनीज है। करीब 88.5 करोड़ से ज्यादा लोग इस भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

शिशु गीत

प्रस्तुति : राजेंद्र निशेश

पानी

बड़े काम का है यह पानी,
जीवित इससे हैं सब प्राणी।
व्यर्थ नहीं है इसे बहाना,
पछताओगे बात न मानी।।

धरा

यह धरा हमारी प्यारी है,
क्या रंग-भरी फुलवारी है।
मणि-मणिका, पौधों की शोभा,
ममता इसकी बलिहारी है।।

सूरज निकला

सूरज निकला हुआ सवेरा,
तितली जागी, जागा भौंरा।
कल-कल नदिया गीत सुनाती,
कुदरत ने क्या रंग-बिखेरा।।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

आसमान

दूर कितना आसमान है
इससे दिखता सुन्दर जहान है।
लगता है छू लेंगे इसे हम,
पर काम नहीं ये आसान है।।

काले बादल जब छा जाते,
बारिश लेकर पास आ जाते।
कीचड़ होगा रास्तों पर,
सोच यही सब घबराते।।

सूरज जब करता सलाम,
गर्मी हो जाती है बेलगाम।
पसीना करता हाल खराब,
कूलर-पंखे ही आते काम।।

आसमान फिर मुस्कुराता,
सबको अपने पास बुलाता।
बारिश, गर्मी सभी जरूरी,
सबको है यह बतलाता।

बाल कहानी : राजेश अरोड़ा

दीपक और आलोक

दीपक पढ़ाई में बहुत फिसड्डी था। हर कक्षा वह बड़ी मुश्किल से पास करता। कभी उसकी 'कम्पार्टमेंट' आती तो कभी 'ग्रेस' के नम्बरों से पास होता। कारण यह नहीं था कि उसका दिमाग नहीं था बल्कि वह दिमाग का उपयोग नहीं करता था। मेहनत से जी चुराता। सदा आलस में डूबा रहता।

उसके मम्मी-पापा ने आठवीं में उसका स्कूल बदल दिया ताकि पढ़ाई का उसे नया माहौल मिले। किन्तु नये स्कूल में भी उसका वही हाल रहा।

एक दिन आलोक नाम का एक नया लड़का उसकी कक्षा में भर्ती हुआ। वह पढ़ाई में बड़ा होशियार था। कक्षा की सभी विषयों की पाठ्य-पुस्तकों का उसे पहले से ही पूर्ण ज्ञान था। उसकी दीपक से भी जान-पहचान हुई। फिर जान-पहचान धीरे-धीरे दोस्ती में बदल गई। दोनों साथ-साथ रहते और साथ-साथ खेलते-खाते।

एक दिन आलोक ने दीपक का प्रगति-कार्ड देख लिया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। आलोक बोला, ''दीपक! क्या बात है? तुम पढ़ाई में बहुत कमजोर हो।''

दीपक ने झूठ बोला, ''आलोक! क्या करूं? आज तक मुझे कोई अच्छा साथी ही नहीं मिला।''

आलोक बोला, ''चलो! आज से हम दोनों साथ-साथ पढेंगे भी। मैं पढ़ाई में तुम्हारी सहायता करूंगा।''

''ठीक है।'' दीपक ने भी हामी भर दी।

दोनों साथ-साथ पढ़ने बैठते। दीपक का मन पढ़ाई में न लगता। वह बार-बार बहाने बनाता।

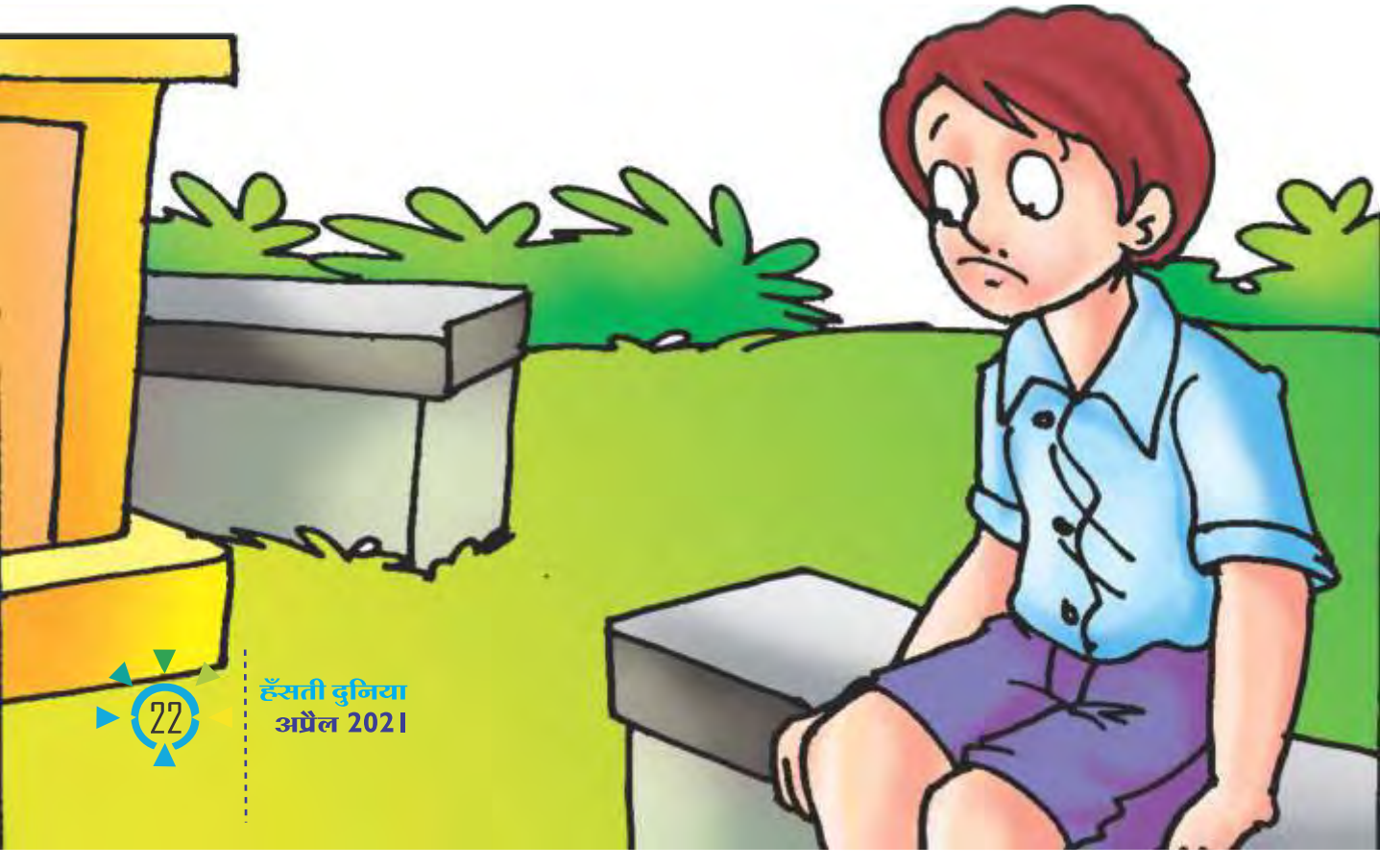

आठवीं की परीक्षा हुई। परीक्षाफल आया। आलोक प्रत्येक विषय में शत-प्रतिशत अंक लेकर पास हुआ और दीपक फेल हो गया। उसे बड़ी मायूसी हुई।

स्कूल का वार्षिकोत्सव आया। इस कार्यक्रम में स्कूल के प्रधानाचार्य ने आलोक को बुलाकर उसकी बड़ी सराहना की और पुरस्कार देकर उसे सम्मानित किया। बच्चों ने खूब तालियां बजाईं। फिर प्रधानाचार्य ने असफल हुए छात्रों को सफलता का मार्ग बताते हुए कहा– बच्चो! दीपक के आलोक का रहस्य इस बात में निहित है कि वह निरन्तर जलता रहता है। इसी प्रकार जो कठिन परिश्रम करते हैं वे निश्चय ही अपने जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। संघर्ष ही जीवन है और आलस जीवन की बरबादी।

यह सुन दीपक सोचने लगा, ''यदि मैं भी कठिन परिश्रम करूं तो आलोक की तरह मेरा भी सम्मान होगा।'' बस! दीपक पर मेहनत का रंग चढ़ गया। फिर उसने वो कर दिखाया, जो उसने सोचा।

आओ तुम्हें बताएं

- महावीर चक्र, अशोक चक्र, कीर्ति चक्र और शौर्य चक्र वीरता के लिए प्रदान किये जाते हैं।
- शास्त्रीय संगीत में उल्लेखनीय योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार दिया जाता है।
- अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए विक्रम साराभाई पुरस्कार दिया जाता है।

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा

क्या आप जानते हैं ?

- दिमाग का बायां हिस्सा हमारे शरीर के दाएं भाग को और दायां हिस्सा बाएं भाग को नियंत्रित करता है।
- एक औसत व्यक्ति अपने पूरे जीवन में करीब 16 हजार गैलन पानी पी लेता है।
- गर्मियों में 'सनबर्न' होना आम बात है मनुष्य के बाद केवल सूअर ही ऐसा प्राणी है जिसे सनबर्न होता है। यह सनबर्न का शिकार होने से बचने के लिए ही कीचड़ में लोटकर उसे शरीर पर लपेटे रहता है।
- ध्रुवीय रीछ (पोलर बीयर) के पैर के तलवों में बाल होने के कारण ही वह बर्फ पर फिसलने से बचा रहता है।
- अफ्रीका का ओकापी पशु जिराफ परिवार का सदस्य है। उसकी जीभ इतनी लम्बी होती है कि वह उससे अपने कान का भीतरी भाग चाटकर आसानी से साफ कर लेता है।
- बाज का तेज नजर के मामले में कोई जवाब नहीं। 80 मीटर की ऊँचाई से धरती पर बैठा टिड्डा जो कि अंगुली के बराबर होता है को आसानी से देख लेता है।
- पोलैंड में विलिस्ज्का नाम का एक नगर है जो नमक का बना है। यह शहर नमक खदान के बीचों-बीच है। यहाँ खम्भों से लेकर लैम्पपोस्ट तक तथा गलियों से लेकर पुलों तक सब कुछ नमक की चट्टानों के बने हैं।
- हवाई द्वीप में स्थित वाई अले-अल में वर्षभर यानि यहाँ साल में 350 दिन बारिश होती रहती है।
- क्या तुमने कभी आसमान में मेढ़क-मछलियों की बारिश की बात सुनी है? नहीं तो इसमें ताज्जुब करने की कोई बात नहीं है। कभी-कभी प्रचंड वेग से चलती हवाएं मेढ़क-मछलियों को ताल-तलैया से उठा ले जाती है बाद में उन्हें पुनः बारिश के साथ जमीन पर पटक देती हैं।
- विश्व में सबसे अधिक ऊन ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है।
- भारत, नेपाल, भूटान और इंडोनेशिया आदि देशों में उड़ने वाली छिपकली मिलती है। इसे 'ड्रेको' भी कहा जाता है।
- समुद्री सांप जिन्हें 'हाइड्रोफिस' कहते हैं। ये संसार के सबसे जहरीले सांप हैं। ये समुद्री सांप समुद्री जन्तुओं का भक्षण करते हैं और जल में उर्ध्वाधर तैरते हैं।
- फाल्को पेरेग्रिनस नामक बाज पक्षी सबसे तेज गति से उड़ने वाला पक्षी है।

प्रेरक कहानी : ईलू रानी

अनोखा उपकार

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक 'बेंजामिन फ्रैंकलिन' को एक विज्ञान पत्रिका प्रकाशित करने के लिए कुछ धन की जरूरत थी लेकिन कहीं से भी प्रचुर मात्रा में धन का इन्तजाम नहीं हो रहा था। धन अभाव के कारण उन्हें टेंशन ने भी घेर लिया था। एक दिन सुबह-सुबह उनके दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। दरवाजा खोला तो उनके सामने बचपन का एक मित्र खड़ा था जो एक शहर में उद्योगपति था। उन्होंने मित्र का हार्दिक स्वागत किया। चाय-नाश्ते के उपरांत उन्होंने मित्र से कहा– मैं एक विज्ञान पत्रिका का प्रकाशन करना चाहता हूँ लेकिन ....

–लेकिन क्या?– उद्योगपति मित्र ने पूछा।

–दरअसल मेरे पास पर्याप्त धन नहीं है।– बेंजामिन ने अपनी समस्या बताते हुए कहा।

यह सुनते ही मित्र ने अपने बैग से चैक बुक निकाली और 50 हजार डालर का चैक लिखते हुए कहा– इस राशि से पत्रिका का प्रकाशन शुरू करो।

बेंजामिन ने विज्ञान पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया और कुछ ही महीनों में पत्रिका सफलता का शिखर चूमने लगी। उन्हें हर माह अच्छा मुनाफा भी मिलने लगा। जब उनके पास प्रचुर मात्रा में धन एकत्रित हो गया तो वे अपने मित्र को उधार की रकम वापस करने गये।

इस पर मित्र ने कहा– अब मैं यह राशि नहीं लूंगा। हाँ, तुम इस राशि को अपने पास ही रखो और किसी जरूरतमंद व्यक्ति की मदद करो। जब वह व्यक्ति आपको रकम वापस करने आए तो उसे कहो कि वह इस रकम से किसी अन्य जरूरतमंद की सहायता करे। इस तरह मेरे इन डालरों से लोगों की निरंतर सहायता होती रहेगी।

यह सुझाव बेंजामिन को काफी पसन्द आया। उन्होंने अपने उद्योगपति मित्र को धन्यवाद देते हुए कहा– आपका यह उपकार इतिहास में सदा अमर रहेगा।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

पर्यावरण के रक्षक

करो सिंचाई पेड़ की, आये सबके काम,
सबको ही छाया मिले, महके सारे धाम।

देते सबको फूल-फल, मिलते मीठे आम,
फर्नीचर है बन रहा, लकड़ी से हर धाम।

पंछी को दे आसरा, ढोर चबाते पान,
मीठे-मीठे फल मिले, मीठा इनका नाम।

पेड़ बड़े ही काम के, ऊँचा इनका स्थान,
देते शिक्षा त्याग की, सभी कमाओ नाम।

धरती हरी-भरी रहे, हरे-भरे खलिहान,
पर्यावरण के रक्षक, ये हैं देव समान।

बाल कविता : रूपनारायण काबरा

कितना घातक पोलीथीन

करे प्रदूषण, नाली रोके,
धीमा विष है, पोलीथीन।
कपड़े का थैला अपनाओ,
दूर हटाओ पोलीथीन।।

पर्यावरण को खतरा इससे,
ये रोगों को न्योता देता है।
खाद्य पदार्थ बिगड़ जाते हैं,
सब कुछ इसमें सड़ जाते हैं।।

करो किनारा इस संकट से,
बड़ी मुसीबत पोलीथीन।
ना गलता है, ना सड़ता है,
अमर प्रदूषण पोलीथीन।।

पशु खाकर हैं मरते,
मृदा बिगाड़े पोलीथीन।

विशेष लेख : किरण बाला

म्यूजियम की शुरुआत कैसे हुई ?

आपने म्यूजियम अथवा संग्रहालय तो अवश्य देखे होंगे और वहाँ विचित्र, अद्‌भुत वस्तुओं को देख आश्चर्यचकित भी हुए होंगे। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इसकी शुरुआत कैसे हुई?

'म्यूजियम' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'माउसियन' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'एकांत में अध्ययन करने का मंदिर।'

विश्व का पहला म्यूजियम अलेक्जेंड्रिया में ईसा से तीन शताब्दी पहले बनाया गया था। इसमें शोधकर्ताओं को ज्ञान प्रदान करने वाली संसार की अनेक वस्तुओं का संग्रह किया गया था। इसके बाद ऐसे म्यूजियम की स्थापना हुई जिसमें विविध यंत्र, जानवरों की खालें, हाथीदंत आदि रखे जाते थे।

19वीं शताब्दी में राजा-महाराजाओं ने म्यूजियमों की स्थापना में बड़ा सहयोग दिया। इनमें वे देश-विदेश की विचित्र वस्तुओं का संग्रह करते थे। हालांकि ये म्यूजियम केवल राजपरिवार और उनके सगे-संबंधियों के लिए ही थे जिनमें जनसाधारण को जाने की अनुमति नहीं थी।

फ्रांस की राज्य क्रांति के बाद म्यूजियम आम जनता के लिए खोल दिए गए। इसके बाद इनके लिए अच्छे, बड़े भवनों का निर्माण किया जाने लगा। 1830 में जर्मनी के बर्लिन शहर में फाल्टेस म्यूजियम का निर्माण किया गया।

–आधुनिक ढंग का सबसे पुराना संग्रहालय ऑक्सफोर्ड में है जो सन् 1679 में बना था।

–1874 में स्थापित अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री को सबसे बड़ा म्यूजियम होने का दर्जा प्राप्त है।

आज म्यूजियम में गप, विज्ञान, कला, इतिहास, पुरातत्व, ज्योतिष विज्ञान आदि समस्त विद्याओं की वस्तुएं देख सकते हैं।

अज़ीबो गरीब संग्रहालय

रोटी संग्रहालय : जर्मनी के एक नगर में स्थित एक संग्रहालय में प्राचीनकाल की रोटी भी सुरक्षित रखी हुई है। इस संग्रहालय में समय-समय पर खाई जाने वाली रोटी तथा उसे तैयार करने का तरीका व अन्य विवरण दिया गया है। काहिरा के एक संग्रहालय में चार हजार वर्ष पूर्व की गेहूँ की रोटी भी देखी जा सकती है।

छातों व टोपियों का संग्रहालय : जर्मनी के स्टटगार्ड नगर में छातों का संग्रहालय है। जिसमें छातों के सैकड़ों नमूने हैं। यहाँ धूप व वर्षा से बचने के लिए उपयोग में लाये जाने वाले प्राचीनतम छातों से लेकर

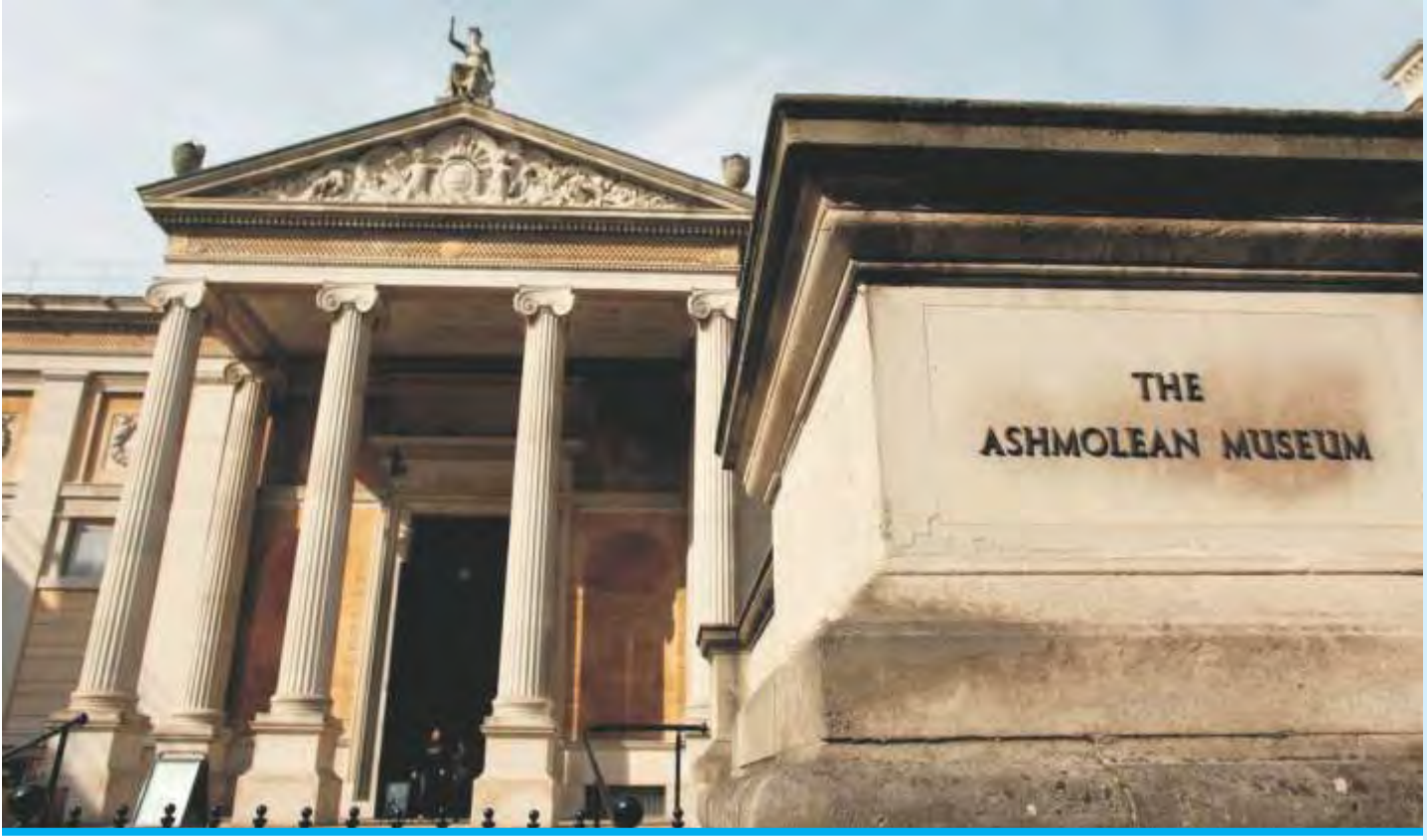

अत्याधुनिक एवं आकर्षक छाते भी हैं। जिन्हें आसानी से बंद करके अपनी जेब में भी रखा जा सकता है। साथ ही जर्मनी के हैम्बर्ग में टोपियों का संग्रहालय है जहाँ प्राचीन युग में उपयोग में लिए जाने वाले घास के टोप से लेकर आधुनिक फैशनदार नये से नये टोप यहाँ देखे जा सकते हैं।

तलवार व चाकुओं का संग्रहालय : जर्मनी का सॉलिंगेन शहर लोहे की वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पुरानी तलवारों तथा चाकुओं का एक संग्रहालय स्थापित है। जिसमें पिछले 400 वर्ष पुराने चाकू, छुरी, तलवारों, कैंची तथा अन्य वस्तुएं संग्रहित हैं। इस संग्रहालय में जल्लाद द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले खांडे से लेकर आधुनिक तलवार जो सैनिक उपयोग में लाते थे, का अनूठा संग्रह है।

माप-तोल का दुर्लभ संग्रहालय : स्टटगार्ट के निकट बेलिंजन शहर में होरेन जोलन किले में बने संग्रहालय में तोल और माप के काम में आने वाली पिछले 4,500 वर्ष पूर्व की वस्तुएँ व उपकरण हैं। यहाँ सन् 1763 में बनाया गया पहला पेण्डुलम मापक विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

खटमल-मक्खी संग्रहालय : ऐसे जीव-जन्तु जिनका नाम लेने तक में घृणा होने लगे, पर पश्चिम जर्मनी के अस्चैफेनबर्ग के प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय में संग्रहित है। इसका प्रारम्भ एक ऐसे व्यक्ति ने किया जिसे खटमल-मक्खी पालने का शौक चर्राया और बस वो अपनी धुन में लग गया। जब उसके पास खटमल-मक्खियों की एक हजार प्रजातियां एकत्रित हो गई तो उसने उसे स्थानीय निकाय के एक अधिकारी को सौंप दिया और इस तरह इनका संग्रहालय स्थापित हो गया।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : ऊष्ण जलवायु वाले स्थानों में घरों की बाहरी दीवारें सफेद रंग की ही क्यों रखी जाती हैं?

उत्तर : प्रकाश की किरणों में सात रंग होते हैं जिनमें अलग-अलग तरंग-दैर्ध्य का प्रकाश होता है। जब प्रकाश की किरणें किसी वस्तु पर पड़ती हैं तो उसे गर्म कर देती हैं। ऊष्ण जलवायु वाले स्थानों पर गर्मी से बचने के लिए घरों की बाहरी दीवारें सफेद रंग की ही रखी जाती हैं। सफेद रंग पर जब प्रकाश की किरणें पड़ती हैं तो वे परावर्तित हो जाती हैं और दीवारें गर्म नहीं हो पातीं।

प्रश्न : चाय बनाने वाली केतली के हत्थे पर बेंत की पत्ती क्यों चढ़ाई जाती है?

उत्तर : चाय बनाने वाली केतली के हत्थे पर बेंत की पत्ती चढ़ाई जाती है। दरअसल, बेंत ऊष्मा की कुचालक है। जब केतली में गर्म चाय डाली जाती है तो केतली भी गर्म हो जाती है परन्तु जब केतली के हत्थे पर बेंत की पत्ती चढ़ा दी जाती है तो यह गर्म महसूस नहीं होती क्योंकि बेंत में से ऊष्मा का संचरण नहीं हो पाता। फलस्वरूप, तुम केतली को सरलता से पकड़ सकते हो।

प्रश्न : सर्दियों में रात्रि के समय लकड़ी अथवा मिट्टी के फर्श की अपेक्षा सीमेंट का फर्श अधिक ठंडा क्यों होता है?

उत्तर : लकड़ी अथवा मिट्टी ऊष्मा की कुचालक है। अतः जब तुम लकड़ी या मिट्टी के फर्श को छूते हो तो तुम्हारे शरीर की गर्मी का चालन फर्श में नहीं होता और यह तुम्हें ठंडा प्रतीत नहीं होता। दूसरी ओर सीमेंट ऊष्मा का सुचालक है जिससे सर्दियों में इसका तापमान कम हो जाता है। सीमेंट के फर्श को छूने से तुम्हारे शरीर की गर्मी फर्श में चली जाती है। परिणामस्वरूप, तुम्हें ठंडक प्रतीत होती है।

पौराणिक कथा : डॉ. परशुराम शुक्ल

क्रोध का कीड़ा

एक बार श्रीकृष्ण, बलराम और सात्यिकि वन भ्रमण करने गये। उनके साथ कुछ सेवक और सैनिक भी थे। भ्रमण करते-करते शाम हो गई। अचानक बड़ी तेज तूफानी हवाएं चलने लगीं और मूसलाधार वर्षा आरम्भ हो गई। सभी

अपनी-अपनी सुरक्षा के लिए इधर-उधर भागे। इसी भागदौड़ में तीनों योद्धा अपने सेवकों और सैनिकों से बिछुड़ गये।

श्रीकृष्ण, बलराम और सात्यिकि एक साथ थे। जब तूफान और वर्षा शान्त हुए तो रात का अन्धेरा घिर चुका था। तीनों जंगल के रास्तों से अनजान थे। रात के अन्धेरे में मार्ग खोजना भी सम्भव न था। अत: तीनों ने जंगल में ही रात्रि व्यतीत करने का निश्चय किया।

जंगल हिंसक जीव-जन्तुओं से भरा था। अत: तीनों ने मिलकर यह तय किया कि बारी-बारी से एक व्यक्ति पहरा देगा और दो व्यक्ति विश्राम करेंगे।

रात्रि के तीन प्रहर शेष थे।

सर्वप्रथम सात्यिकि पहरे पर खड़े हुए और श्रीकृष्ण तथा बलराम भूमि पर ही विश्राम करने लगे। दोनों बहुत थके हुए थे। अत: शीघ्र ही उन्हें नींद आ गई।

सात्यिकि को पहरा देते हुए कुछ ही क्षण बीते थे कि एक विशालकाय भयानक राक्षस प्रकट हुआ।

सात्यिकि ने राक्षस को देखा तो सावधान हो गये।

उसी समय राक्षस बोला– ''सात्यिकि! यदि तुम मुझे इन दोनों योद्धाओं का भक्षण कर लेने दो तो मैं तुम्हें जीवित छोड़ सकता हूँ।''

यह सुनकर सात्यिकि को क्रोध आ गया। उन्होंने राक्षस को युद्ध के लिए ललकारा और अपनी तलवार से उस पर जोरदार वार किया।

राक्षस पर तलवार का कोई प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि सात्यिकि के प्रहार से उसका आकार और बल बढ़ गया। अब उसने पहले से अधिक भयानक रूप धारण किया और सात्यिकि पर झपटा।

सात्यिकि सावधान थे। फिर भी वह राक्षस के प्रहार से संभल नहीं सके और गिर पड़े।

राक्षस दूर खड़ा हँस रहा था।

राक्षस की हँसी से सात्यिकि का क्रोध और बढ़ गया। उन्होंने पुनः क्रोध में आकर राक्षस पर वार किया।

पहले की तरह इस बार भी सात्यिकि के वार का राक्षस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि उसका आकार और बल और अधिक बढ़ गया।

कुछ देर बाद दोनों में मल्लयुद्ध आरम्भ हो गया। राक्षस जब सात्यिकि को पटकता तो सात्यिकि को गहरी चोट लगती किन्तु जब सात्यिकि क्रोध में आकर पूरी शक्ति से राक्षस को पटकते तो उसे कुछ भी न होता और उसका आकार तथा बल पहले से भी और अधिक बढ़ जाता।

दोनों को मल्लयुद्ध करते-करते एक प्रहर बीत गया।

अचानक राक्षस गायब हो गया।

सात्यिकि बुरी तरह घायल हो चुके थे। उन्हें नींद भी आ रही थी। अतः उन्होंने बलराम को जगाया और सोने चले गये।

बलराम को भी पहरा देते हुए कुछ ही क्षण बीते होंगे कि वही राक्षस पुनः प्रकट हुआ और बलराम से बोला– ''यदि तुम मुझे इन दोनों योद्धाओं का भक्षण कर लेने दो तो मैं तुम्हें जीवित छोड़ सकता हूँ।''

बलराम बड़े शक्तिशाली थे। उन्हें भी क्रोध आ गया और उन्होंने क्रोध में आकर अपनी गदा से राक्षस पर प्रहार किया।

सात्यिकि के समान ही बलराम के प्रहार का भी राक्षस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि पहले की तरह उसका आकार और बल बढ़ गया।

अब राक्षस ने बलराम पर मुष्टि प्रहार किया।

बलराम लड़खड़ा गये।

कुछ समय बाद दोनों में मल्लयुद्ध आरम्भ हो गया। राक्षस की स्थिति पहले जैसी थी। वह बलराम को पटकता तो बलराम की हड्डियां चटक जातीं और जब बलराम क्रोध में आकर राक्षस को पटकते तो उसे कुछ भी न होता बल्कि उसका आकार और बल और अधिक बढ़ जाता।

बलराम को भी राक्षस के साथ लड़ते-लड़ते एक प्रहर बीत गया और वह भी सात्यिकि के समान बुरी तरह घायल हो गये। इधर दूसरा प्रहर बीतते ही राक्षस गायब हो गया।

बलराम भी बुरी तरह घायल हो चुके थे और उन्हें नींद भी आ रही थी। अत: श्रीकृष्ण को जगाकर वह सो गये।

श्रीकृष्ण ने अपनी बंसी निकाली और बजाने लगे।

अचानक वही राक्षस फिर प्रकट हुआ।

उसने श्रीकृष्ण को बंसी बजाते देखा तो भयानक अट्टहास किया और बोला– ''कृष्ण! यदि तुम मुझे इन दोनों का भक्षण कर लेने दो तो मैं तुम्हें जीवित छोड़ सकता हूँ।''

''और यदि मैं तुम्हें इन दोनों का भक्षण न करने दूं तो तुम क्या करोगे?'' श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए बोले।

''तो मैं तुमसे मल्लयुद्ध करूंगा।'' राक्षस क्रोध से चीखा।

''यह तो बहुत अच्छा होगा। इससे मेरा एक प्रहर समय भी कट जायेगा और मल्लयुद्ध करने से शरीर में स्फूर्ति भी आ जायेगी।'' श्रीकृष्ण राक्षस का उपहास करते हुए बोले।

श्रीकृष्ण के क्रोध न करने के कारण न तो राक्षस का आकार बढ़ रहा था और न ही उसका बल बढ़ रहा था। फिर भी वह श्रीकृष्ण से भिड़ गया।

श्रीकृष्ण राक्षस से अपने को बचाते और जब राक्षस प्रहार करता तो उसका उपहास उड़ाते।

इसका राक्षस पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ रहा था। उसका आकार तेजी से छोटा होता जा रहा था और उसका बल भी घटता जा रहा था। कुछ ही समय बाद वह श्रीकृष्ण के घुटने से भी छोटा रह गया। उसकी पूरी शक्ति समाप्त हो चुकी थी।

श्रीकृष्ण अभी भी मुस्कुराते हुए राक्षस का उपहास उड़ा रहे थे। वह उसे बार-बार मल्लयुद्ध के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे।

अचानक राक्षस एक कीड़े में बदल गया।

श्रीकृष्ण ने उसे उठाकर अपने पीताम्बर के छोर से बाँधा और बलराम तथा सात्यिकि को जगाने लगे।

तीसरा प्रहर भी बीत चुका था।

बलराम और सात्यिकि उठे तो उनके चेहरे सूजे हुए थे तथा शरीर की नस-नस दुख रही थी।

श्रीकृष्ण के पूछने पर दोनों ने रात्रि के राक्षस की घटना सुनाई।

सात्यिकि और बलराम की कहानी सुनकर श्रीकृष्ण जी हँसने लगे और बोले– ''दाऊ! वह राक्षस और कोई नहीं, क्रोध था। जैसे-जैसे आप दोनों ने क्रोध किया। राक्षस का आकार बढ़ा और उसका बल भी बढ़ा। वह राक्षस मुझे भी मिला था। लेकिन मैंने अपने क्रोध पर नियंत्रण रखा। अन्त में वह एक कीड़े में बदल गया।'' इतना कहकर उन्होंने अपने पीताम्बर के छोर से बँधा निरीह कीड़ा निकाला और फिर कहने लगे– ''देखो सात्यिकि! यही है वह राक्षस। पहचानो इसे। इसी ने तुम दोनों की यह गति बनायी है।

कविता : कुसुम अग्रवाल

रट्टू तोता

मैं तोता हूँ हरे रंग का,
चोंच मेरी लाल है।
काली कंठी पहनी मैंने,
ठुमक-ठुमक चाल है।।

देख रहा हूँ इस बगिया में,
तरह-तरह के फूल हैं।
लेकिन बच्चे नहीं यहाँ पर,
गये सभी स्कूल हैं।।

जब बच्चे आकर बगिया में,
कविता कोई सुनाएंगे।
मैं चुपके से सब रट लूंगा,
गीत कोई जो गाएंगे।।

रट्टू तोता कहते हैं सब,
लेकिन मेरी क्या गलती।
विद्यालय में नहीं किसी ने,
मुझको करवाया भरती।।

बाल कविता : डॉ. रामदुलार सिंह

आ री कोयल

आ री कोयल मुझे सुना दो,
एक सुन्दर सा गाना।
तुम्हें खिलाऊँगा मैं जी भर,
जो खाओगी खाना।

रोज सवेरे मेरे घर पर,
बहना तुम आ जाना।
खेलूंगा मैं साथ तुम्हारे,
और गाऊँगा गाना।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
आर्यमन प्रजापति

किट्टी की लापरवाही से किताब फट गई थी।
अरे! किट्टी तुमने मोली की किताब का क्या हाल कर दिया?
मोली ये लो अपनी किताब।
किट्टी ये तो फटी हुई है। तुमने इसे फाड़ दिया।
नहीं, मैंने कुछ नहीं किया।
किट्टी बहुत ही लापरवाह है।
मोली तुम्हारी किताब कैसे फट गई?
इसे किट्टी पढ़ने के लिए ले गई थी परन्तु किट्टी की लापरवाही से ये किताब फट गई है।
चिंटू, मुझे अपना नाचने वाला बंदर दो। मैं इससे खेलूंगी।
नहीं, मैं तुम्हें तो बिल्कुल नहीं दूंगा।

किट्टी, इस पनीर को फ्रिज में रख दो।
अभी तो यहीं रख देती हूँ बाद में फ्रिज में रख दूंगी।
थोड़ी देर में पनीर को चूहे खाने लगते हैं।
किट्टी, देखो पनीर को चूहे खा रहे हैं। तुमने पनीर को फ्रिज में नहीं रखा। तुम इतनी लापरवाह कैसे हो सकती हो?
क्या है मम्मी, आप हमेशा डांटते रहते हो?
किट्टी, देखो इतना लापरवाह होना बिल्कुल भी सही नहीं है, इससे तुम्हें ही नुकसान होगा।

मम्मी, चिंटू ने भी मुझे अपना खिलौना देने से मना कर दिया और कहा कि मैं उसे तोड़ दूंगी।
हाँ, तुम्हारी लापरवाही की वजह से उसने ऐसा कहा है।
मम्मी सही कह रही थी मेरी वजह से बहुत नुकसान हो रहा है।
दोस्तों प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो। मैं अब कभी लापरवाही नहीं करूँगी। मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया है।
किट्टी, तुम्हें अपनी लापरवाही का एहसास हो गया है। ये अच्छी बात है। अब ये बन्दर का खिलौना ले लो। अब तुम इससे खेल सकती हो परन्तु इसे सम्भालकर रखना।
थैंक यू, चिंटू।
अब मैं हर चीज़ का ध्यान रखूंगी और लापरवाही नहीं करूंगी।
किट्टी अगर तुम्हें दोबारा और किताब चाहिए तो तुम ले लेना परन्तु सम्भालकर रखना।

कभी न भूलो

- चाहे गुरु पर हो या ईश्वर पर श्रद्धा अवश्य रखनी चाहिए क्योंकि बिना श्रद्धा के सब बातें व्यर्थ होती हैं। **– समर्थ रामदास**
- जो व्यक्ति विकास के लिए खड़ा है, उसे उस हर रुढ़िवादी चीजों की आलोचना करनी होगी, उससे अविश्वास दिखाना होगा तथा उसे चुनौती देना होगा। **– भगतसिंह**
- दो चीजों की आदत डालिए। मदद करने की या किसी को कोई भी नुकसान न पहुँचाने की। **– हिप्पोक्रेटिस**
- मूर्खों के प्यार की अपेक्षा बुद्धिमानों की डांट अधिक लाभप्रद है। **– विलियम ब्लेक**
- विश्वास वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश किया जा सकता है। **– हेलेन केलर**
- एक निराशावादी व्यक्ति को हर पल मुश्किल ही दिखाई देती है लेकिन इसके उलट आशावादी को हर पल हर मुश्किल में एक अवसर दिखाई देता है।**– विंस्टन चर्चिल**
- जिस हरे-भरे वृक्ष की छाया का आश्रय लेकर रहा जाए, उसके उपकारों का ध्यान रखकर उसके एक पत्ते से भी द्रोह नहीं करना चाहिए। **– महाभारत**
- शासकों के अच्छे कार्यों से ही राष्ट्र का कल्याण होता है। **– चाणक्य**
- सही स्थान पर बोया गया सुकर्म का बीज ही समय आने पर महान फल देता है। **– कथा सरितसागर**
- वैर के कारण उत्पन्न होने वाली आग एक पक्ष को स्वाहा किए बिना शान्त नहीं होती। **– वेदव्यास**
- विवेक जीवन का नमक है और कल्पना उसकी मिठास। एक जीवन को सुरक्षित रखता है और दूसरा उसे मधुर बनाता है।
- लगातार श्रम करना ही आपकी सफलता का साथी है इसलिए श्रम को सकारात्मक बनाएं विनाशक नहीं। **– पिकासो**
- हमारी खुशी का स्रोत हमारे ही भीतर है। यह स्रोत दूसरों के प्रति संवेदना से पनपता है। **– दलाईलामा**
- संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है। असंभव से भी आगे निकल जाना। **– स्वामी विवेकानंद**
- आपकी प्रतिभा, आपको भगवान का दिया गया उपहार है। आप इसके साथ क्या करते हैं, यह आपके द्वारा भगवान को दिया गया उपहार होता है। **– लियो बुसकैजलिया**
- नफरत मानवता की दुश्मन है। **– महात्मा बुद्ध**
- महान ध्येय महान मस्तिष्क की जननी है। **– इमन्स**

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

बाल कहानी : अमर सिंह शौल

अपना-अपना काम

मोनू एक किसान का बेटा था। जिसकी आयु पन्द्रह साल की थी। एक बार वह अपने बैलों को नदी के किनारे चराने के लिए गया। बरसात का मौसम था। नदी के किनारे इधर-उधर खूब घास उगी हुई थी। मोनू अपने साथियों के साथ खेलने में मस्त था। बैल घास चरते-चरते मक्की के खेत में जा घुसे। जब थोड़ी देर बाद मोनू को बैलों का ख्याल आया तो वह इधर-उधर बैलों को देखने लगा। उसे बैल दिखाई नहीं दिए। थोड़ा आगे-पीछे ढूँढने के बाद उसे बैल नदी के पास मक्की के खेत में दिखाई दिए। बैल खूब मजे से मक्की खा रहे थे। मोनू दौड़ा-दौड़ा गया। उसने 'आव देखा न ताव' लगा बैलों को डंडे से पीटने। वह बैलों को गुस्से से पीटता-पीटता घर तक ले आया। जब उसके बापू ने उसे देखा तो वह मोनू से बोला– मोनू क्या बात है? तुम बैलों को क्यों पीट रहे हो?

बापू ये मक्की के खेत में घुस गए थे। बहुत सारी मक्की खा गए। मोनू ने जरा गुस्से से कहा।

अच्छा-अच्छा अब इन्हें सीधा गौशाला में बांध दे।

मोनू बैलों को बांधकर जैसे ही घर के अंदर आया। उसके बापू ने उससे पूछा– मोनू जब बैल खेत में घुसे थे तो तुम कहाँ थे?

मोनू चुप रहा।

मोनू मैं क्या पूछ रहा हूँ?

वहीं था बापू।

तुम झूठ बोल रहे हो। तुम अपने संगी-साथियों के साथ खेलने में मस्त होंगे और इसी बीच बैल खेतों में घुस गये होंगे।

हाँ बापू।

कसूर तुम्हारा है। तुमने बेवजह ही बैलों की पिटाई कर दी। मोनू का बापू उसकी ओर देखते हुए बोला– ये तो पशु हैं। इनमें इतना दिमाग कहाँ है कि ये घास और मक्की में फर्क समझ सकें। तुम्हें तो सब मालूम था। इन्हें रोकना तुम्हारा काम था। मोनू चुपचाप सुनता रहा।

तुम्हें पता नहीं बैल हमारे लिए कितने उपयोगी होतें हैं? इन्हीं से हम खेतों की जुताई करते हैं। तभी अन्न पैदा होता है। इन्हीं की बदौलत हम सब रोटी खाते हैं। मोनू के बापू ने उसे समझाते हुए कहा– इनसे हमें प्रेम करना चाहिए न कि इन्हें बेमतलब पीटना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि तुमने अपना कार्य जिम्मेदारी से नहीं किया। गलती तुम्हारी है, बैलों की नहीं। तुम बैलों को चराने ले गये थे तो यह जिम्मेदारी तुम्हारी थी कि वे खेती का नुकसान न करे। इन्हें तो भूख लगी थी। जो भी चीज इन्हें खाने को मिली ये खाने लगे। आगे से तुम अपना कार्य पूरी जिम्मेदारी से करना।

–जी बापू, अब के गलती हो गयी, आगे से ऐसा कभी नहीं करुंगा।– मोनू बोला।

बात मोनू को समझ आ चुकी थी कि हमें पशुओं से प्रेम करना चाहिए क्योंकि वे भी तो हमारी तरह जीव हैं।

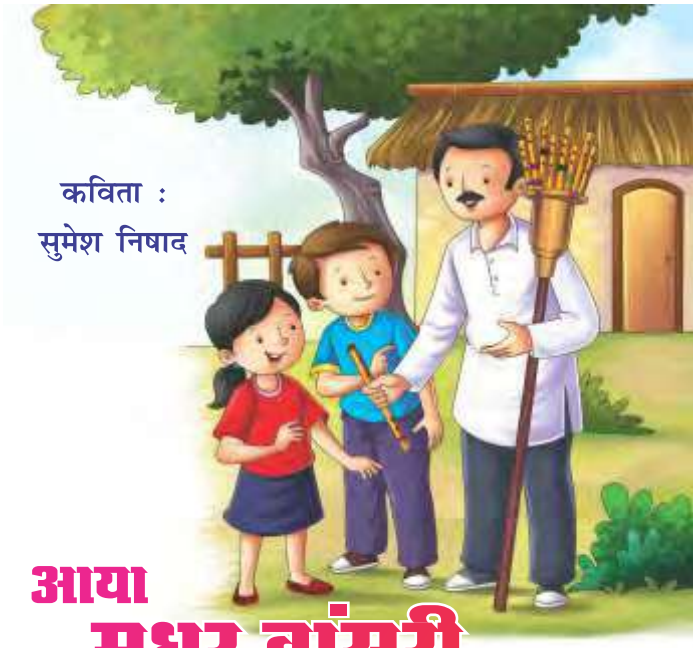

कविता : सुमेश निषाद

आया मधुर बांसुरी वाला

आया मधुर बांसुरी वाला।
छोटी-बड़ी बांसुरी वाला।

बच्चे दौड़-दौड़कर आते।
खुशी-खुशी पास आ जाते।
मिलकर सब बांसुरी बजाते।
फूंक मार सुर साज सजाते।

मन को खूब लुभाने वाला।
आया मधुर बांसुरी वाला।
लाठी में बांसुरी सजाता।
तरह-तरह की बांसुरी लाता।

इन्हें बजाना भी सिखलाता।
हम सबके मन को यह भाता।
प्यारा भला बांसुरी वाला।
आया मधुर बांसुरी वाला।

ले लो सभी बांसुरी ले लो।
अच्छी सुन्दर बांसुरी ले लो।
तान सुरीली वाली ले लो।
राजू मोहन सोहन ले लो।

मीठी तान सुनाने वाला।
आया मधुर बांसुरी वाला।

हमें हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे हँसती दुनिया में कहानियां और कविताएं बहुत पसन्द हैं।

'पढ़ो और हँसो' पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाती हूँ। पढ़कर हम सभी हँसते हुए लोटपोट हो जाते हैं।

हँसती दुनिया मनोरंजन कराने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। मेरे परिवार के सभी सदस्यों को हँसती दुनिया बहुत पसन्द है। हँसती दुनिया को जो कोई भी पढ़ता है। इसकी प्रशंसा करता है।

– ज्योति शर्मा (चार के.एस.पी.)

मुझे हँसती दुनिया बेहद पसन्द है। मैं यह पत्रिका सभी को पढ़ाती हूँ तथा खुद भी बड़ी लगन से पढ़ती हूँ। मैं इसका बेसब्री से इन्तजार करती हूँ और मुझे इसमें सम्पूर्ण सामग्री अच्छी लगती है।

– प्रतीक्षा कुशवाह (इटावा)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मेरे सहित मेरे परिवार के सभी सदस्य हँसती दुनिया का प्रत्येक माह बेसब्री से इन्तजार करते हैं। मेरे सहपाठी भी हँसती दुनिया का प्रत्येक अंक पढ़ते हैं और इसकी प्रशंसा करते हैं।

हम पढ़ने के बाद हँसती दुनिया को आगे किसी और को पढ़ने दे देते हैं।

– अतुल गोपाल (रामनगर, दरभंगा)

आविष्कार एवं आविष्कारक

- ★ फ्रांस के ए.जे. गारनेरिन ने 1797 में पैराशूट का आविष्कार किया।
- ★ एडिसन ने 1877 में ग्रामोफोन का आविष्कार किया तथा 1878-79 में बिजली के बल्ब को संसार के सामने रखा।
- ★ एडीसन ने 1882 में 85 ग्राहकों को एक ही जेनरेटर से बिजली की रोशनी दी।
- ★ 1895 में फ्रांस के लुईस और अगस्टे लुमीएर नामक दो भाइयों ने पहली बार सार्वजनिक तौर पर सिनेमा का प्रदर्शन किया।
- ★ 1842 में मैकमिलन ने साइकिल का निर्माण किया।
- ★ 1876 में अमेरिका के ग्राहमबैल ने टेलीफोन का आविष्कार किया।
- ★ 1808 में इटली के पी. टैरी ने टाइपराइटर का आविष्कार किया।
- ★ 1807 में अमेरिकी वैज्ञानिक रॉबर्ट फुल्टन ने पहली बार स्टीम बोट बनाई।
- ★ 1885 में जर्मनी के जी डैमलर ने मोटर साइकिल का निर्माण कर आवागमन को सहज व सरल बनाया।
- ★ 1895 में जर्मनी के आर. डीजल ने डीजल इंजन का निर्माण किया।

प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

पेंगुइन का अनोखा संसार

छोटे-छोटे पंख एक-दूसरे पर इस तरह चढ़े हुए, मानो पंखों की खपरैल बनाकर पीठ पर टिका दी हो। छोटे लेकिन मोटे पैरों पर अपने भारी शरीर को संभाले, चोंच थोड़ी झुकाकर जब बर्फ पर चलता है, तो ऐसा लगता है जैसे कोई बौना रंग-बिरंगा कपड़ा लपेटे चला जा रहा हो।

यह पेंगुइन पक्षी है, दक्षिणी ध्रुव प्रदेश का निवासी। देखने में जितना अजीब, उतनी ही विचित्र आदतें हैं इसकी। रहता है पानी में, अंडे देता है सूखे में। अंडे देने के लिए एकदम एकांत, शांत वातावरण चाहिए, जहाँ किसी दुश्मन के आने की आशंका न हो। ऐसे स्थान की तलाश में इसे मीलों चलना पड़े, तो वह भी गवारा। यहाँ तक कि दक्षिणी ध्रुव का यह पक्षी भूमध्य रेखा के नजदीक दक्षिण अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के किनारे के टापुओं पर भी देखा जाता है। इतनी दूर ये कैसे चले आते हैं, जानते हैं आप?

ध्रुव प्रदेश की ओर से उत्तर की ओर ठंडी जलधाराएं चलती हैं। ये ठंडी जलधाराएं पेंगुइन को वहाँ तक पहुँचने में मदद करती हैं।

आप सोचते होंगे कि जब यह इतनी दूर चला जाता है, तो उड़कर जाता होगा। नहीं, अपने छोटे पंखों के कारण यह कतई नहीं उड़ पाता। हाँ, तैरता बहुत तेज है। जब यह तैरता है, तो ऐसा लगता है, मानो पानी पर उड़ रहा हो। इसके जालदार पैर तैरने में पतवार का काम करते हैं और वाटरप्रूफ पंखों की खपरैल तो इसके लिए मानो वरदान ही है। सूखी धरती और बर्फीले मार्गों पर यह बड़े पेड़ पर भी चढ़ जाता है। जब यह बतख की तरह चलता है, तो इसकी चाल बड़ी लुभावनी लगती है।

इसका भोजन है छोटी-छोटी मछलियां और दूसरे जल-जंतु। भोजन के मामलों में यह पूरा बगुला भगत है। पानी से इसे इतना प्यार है कि अगर अंडे देने और बच्चे सेने का सवाल न हो तो कभी भी ये पानी से बाहर न निकले। पेंगुइन पक्षी के लिए यही सबसे अधिक जीवट का काम है।

आप जानते हैं कि दक्षिणी ध्रुव पर छह महीने (सर्दियों में) बर्फ जमी रहती है और उन दिनों सूरज के दर्शन नहीं होते परन्तु जब गर्मियों में सूरज निकलता है, तो लगातार छह महीने तक अस्त नहीं होता। और यही मौसम होता है, जब पेंगुइन पक्षियों को अंडे देने के लिए घोंसला बनाना पड़ता है।

लेकिन घोंसला बनाये कहाँ? बर्फ में? और अगर बर्फ पिघल गई तो? इसलिए इसे कोई ऐसा स्थान तलाशना पड़ता है, जहाँ की बर्फ पिघल जाने से पत्थर निकल आये हों और आस-पास की बर्फ पिघल जाने से अंडे बह जाने का खतरा

न हो। स्वाभाविक है कि ऐसी जगह उसे कुछ ऊंचाई पर ही मिलेगी। इस कारण गर्मियां शुरू होते ही ये ऊंचाई की ओर चल पड़ते हैं।

मादा पेंगुइन वर्ष में एक बार सिर्फ दो अंडे देती है और अंडे देने के बाद वह आराम करने के लिए फिर पानी में चली जाती है। तब अंडों और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी अकेले नर को उठानी पड़ती है। मादा को लौटने में करीब चार हफ्ते लग जाते हैं। इस बीच नर कुछ खाता नहीं है। मादा के लौटने पर नर आराम करने चला जाता है।

उनके बच्चों का भोजन भी विचित्र होता है। पेंगुइन पक्षी पानी में जाकर भर पेट मछलियां खाकर घोंसले में लौटता है, जहाँ बच्चे उसका इंतजार कर रहे होते हैं। घोंसले में आकर यह मछलियां बच्चों के सामने उगल देता है, समूची नहीं, करीब-करीब पची हुई, क्योंकि लौटने में इतना समय लग जाता है कि मछलियां पच चुकी होती हैं। माँ-बाप के पेट में पचाया हुआ यह भोजन बच्चे बड़े चाव से खाते हैं। उनके लिए यह पौष्टिक भी होता है।

इतना ही नहीं, पेंगुइन पक्षियों की समाज-व्यवस्था भी बड़ी अच्छी होती है। पेंगुइन के जोड़े एकांत में घोंसला जरूर बनाते हैं, किन्तु एक स्थान पर एक ही जोड़ा हो, ऐसी बात कभी नहीं होती। भला पेंगुइन को पेंगुइन से क्या डर? अंडे देने के मौसम में वे बाकायदा बस्ती बनाकर रहते हैं। और जब माँ-बाप भोजन की तलाश में दूर चले जाते हैं, तो बड़े बच्चे छोटों की देखभाल करते हैं। सब मिल-जुलकर रहते हैं।

अंडे देने के मौसम के बाद यानी सर्दियों में पेंगुइन फिर पानी में चले जाते हैं।

यह तो हुई साधारण पेंगुइनों की बात। लेकिन राजा-रानी के नक्शे कुछ दूसरे ही होते हैं। इस जाति के पेंगुइन आकार में कुछ बड़े होते हैं और इन्हें अंडे देने से लेकर बच्चों को ताकतवर बनाने तक ज्यादा समय लगता है। इसलिए अगर गर्मियों के शुरू में अंडे दें, जैसा कि साधारण पेंगुइन करते हैं, तो सर्दियां शुरू होने तक बच्चे कमजोर ही रह जायें और मर जायें। इसलिए ये गर्मियां शुरू होने से पहले ही अंडे देते हैं। उन दिनों ध्रुव प्रदेश पर रात होती है इसलिए अंडे देने और सेने का काम अंधेरे में ही शुरू करना होता है। ठंड से बचाने के लिए मादा अपने पैरों या पंखों से अंडों को छिपाये रखती है।

पढ़ो और हँसो

रामू को दिखाई नहीं देता था, फिर भी फौज में भर्ती होने के लिए पहुँच गया।

ऑफिसर ने रामू से पूछा – तुम तो दृष्टिहीन हो, तुम दुश्मन से कैसे लड़ सकते हो?

रामू बोला – जी मैं दुश्मन पर अंधा-धुंध फायरिंग कर सकता हूँ।

पत्नी : आप कहाँ जा रहे हो?

पति : शेर का शिकार करने जा रहा हूँ।

पत्नी : (थोड़ी देर बाद) तो जाओ न, खड़े क्यों हो?

पति : कैसे जाऊं, बाहर कुत्ता खड़ा है।

दुखी बैठे श्याम से राम ने पूछा– टेंशन में क्यों हो भाई?

श्याम बोला– क्या बताऊं भैया, एक दोस्त को चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी के लिए दो लाख रुपये दिये थे। अब उसे मैं पहचान ही नहीं पा रहा हूँ।

– गुरमीत टुटेजा (इन्दौर)

राजीव : मेरी नज़र बहुत तेज है। मैं दो किलोमीटर तक की चीज साफ-साफ देख सकता हूँ।

कल्लू : अरे, तुमसे ज्यादा तो मेरी नज़र है। मैं करोड़ों किलोमीटर दूर सूरज को देख सकता हूँ।

चिंट : उस दिन क्रिकेट खेलते समय मैंने ऐसा शानदार शॉट मारा कि सारे खिलाड़ियों के साथ दर्शक भी भाग खड़े हुए।

पिंकू : ऐसी क्या बात हुई?

चिंटू : भाई गलती से गेंद बर्र के छत्ते से जा टकराई।

एक हाथी नदी में नहा रहा था। अचानक एक चूहा कहीं से आया और हाथी को बाहर आने का इशारा किया। हाथी बाहर आया तो चूहे ने उसे सिर से पैर तक देखा और बोला– अब वापस चले जाओ।

हाथी ने चूहे से इसका कारण पूछा तो चूहा बोला– मैं देखना चाह रहा था कि कहीं तुम मेरी निक्कर पहनकर तो नहीं नहा रहे थे।

– रवि कुमार (बराड़ा)

राहगीर : यह सड़क कहाँ जाती है?

दुकानदार : यह सड़क कहीं नहीं जाती। चौबीसों घंटे यहीं रहती है।

पिता जी : बेटा, तुम्हें परीक्षा में कितने अंक मिले हैं?

बेटा : भैया से बीस कम।

पिता जी : भैया को कितने मिले?

बेटा : बीस।

एक पोस्टमैन की नियुक्ति करनी थी। उम्मीदवार से पूछा गया कि धरती से सूर्य कितनी दूर है?

उम्मीदवार बोला– सर! अगर आप मुझे इस रूट पर भेजना चाहते हैं तो मुझे यह नौकरी नहीं चाहिए।

एक सेठ कार में जा रहा था। अचानक उसे धक्का लगा तो उसने ड्राईवर से पूछा– धक्का क्यों लगा?

ड्राईवर बोला– सेठ जी! पत्थर सामने आ गया।

सेठ : बहुत बेवकूफ हो, तुमने होर्न क्यों नहीं बजाया।

– स्नेहा, रजित (ठाकुरपुरा)

राजकुमार : क्यों भई, ये टमाटर ताजा है न?

दुकानदार : बिल्कुल ताजा है साहब! सात दिन से यही बेच रहा हूँ।

ड्राईवर : मैडम, पैट्रोल खत्म हो गया है, गाड़ी आगे नहीं जा सकती।

मैडम : फिर वापस घर ले चलो।

लेखक : आपने मेरा नया उपन्यास पढ़ा? उसकी सब जगह धूम है।

आलोचक : इतनी फुर्सत किसे है? मैं तो इतना व्यस्त हूँ कि जिन पुस्तकों की आलोचना लिखता हूँ, उन्हें भी नहीं पढ़ पाता।

लक्की : (अपने मामा से) मामा जी, आप कैसे नहाते हैं?

मामा : जैसे तुम नहाते हो।

लक्की : अच्छा तो आप भी मेरी तरह नहाते समय रोते हो।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

बालकथा : जसविन्दर शर्मा

कछुआ जीत गया

बातों में राधिका बहुत चतुर थी मगर पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था। किताबें देखते ही उसे सुस्ती आ घेरती थी। उसकी मम्मी उसे किताब देकर जाती और कुछ देर बाद लौटकर देखती तो राधिका या तो कॉपी-किताब पर चित्रकारी कर रही होती या बैठे-बैठे जम्हाई ले रही होती। मम्मी खूब डांटती थी उसे। उसकी रिपोर्ट कार्ड में हर विषय के नीचे लाल स्याही से रेखाएं खींची हुई होती और टिप्पणी वाले खाने में लिखा होता– 'सुस्त', 'हर विषय में कमजोर', 'उत्तीर्ण होना है तो मेहनत करो' आदि।

राधिका का छोटा भाई पढ़ाई में बहुत अच्छा था। वह हमेशा अपना होमवर्क लगन के साथ समय पर करता था। उसकी लिखाई भी बहुत अच्छी थी। मम्मी-पापा के मुँह से राधिका उसकी तारीफ सुनती तो मन मसोसकर रह जाती। राधिका को सोना अच्छा लगता था तथा सहेलियों के साथ गप्पे हांकने में बहुत मजा आता था। पढ़ाई के नाम पर तो उसकी आँखें बन्द होने लगती थी।

दीपावली और दशहरा के कारण स्कूलों में छुट्टियां हो गई थीं। बच्चों के खूब मजे थे। वे हर समय खेलते रहते। बंटी भी खेल में मस्त रहता था। मम्मी-पापा ने उसे क्रिकेट का नया बैट लाकर दिया था। वह आसपास के लड़कों के साथ दिनभर आंगन में खेलता रहता।

राधिका की नानी भी उन दिनों उनके घर पर थी। राधिका के और भी मजे हो गये। वह नानी के पास सोती और उससे कहानी सुनने की जिद्द करती। एक दिन नानी ने उसे कछुए और खरगोश की कहानी सुनाई कि किस तरह घमंडी खरगोश कुछ देर तक तेज भागने के बाद एक पेड़ की छाया में चैन से सो जाता है और कछुआ अपनी धीमी गति के बावजूद लगातार चलते हुए उससे आगे निकलकर दौड़ जीत जाता है।

नानी ने कहा– वैसे तो यह कहानी बहुत पुरानी है मगर इसमें तुम्हारे लिए कुछ सीख भी है। आजकल स्कूल बंद हैं। खरगोश की तरह सभी बच्चे हर समय खेलकूद में मस्त रहते हैं। तुम्हारे पास समय है। तुम अपनी कमजोरी दूर कर सकती हो। तुम्हारे सारे ग्रेड सुधर जाएंगे।

राधिका को नानी की बात कुछ-कुछ समझ में आने लगी थी। अगली सुबह उसने बड़े चाव से किताब खोली। शुरू-शुरू में कुछ देर के लिए उसका सिर चकराया और बोरियत भी हुई। इतनी देर बैठने की आदत जो नहीं थी उसे।

धीरे-धीरे नानी माँ की मदद से उसे पढ़ना अच्छा लगने लगा। कछुए और खरगोश की कहानी वह भूलती नहीं थी। इतिहास और विज्ञान के पाठ जो उसे नीरस और उबाऊ लगते थे, अब अच्छे लगने लगे। अब मम्मी उसे कभी नहीं डांटती थी।

महीने बाद स्कूल खुले। परीक्षा होने में एक महीना बाकी था। राधिका ने पहले से ही अच्छी तैयारी कर रखी थी। बच्चों के तो मानो पसीने ही छूट गये। इतना सारा कोर्स और होमवर्क। स्कूल जब बन्द थे तो उन्होंने जमकर ऐश भी तो की थी। जिस दिन रिजल्ट आना था बंटी बहुत परेशान नजर आ रहा था। मम्मी-पापा जब मार्क-शीट लेकर आए तो उन्होंने सबसे पहले राधिका को शाबाशी दी। वह कक्षा में दूसरे स्थान पर आई थी। बंटी तो बहुत मुश्किल से बस पास हो सका था। नानी बहुत खुश थी। सच में कछुआ जीत गया था।

फरवरी अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. मयंक बघेल — 15 वर्ष
तेलीबांधा रविग्राम,
गली नं. 2, रायपुर (छत्तीसगढ़)

2. आकृति शर्मा — 11 वर्ष
गाँव : मुच्छाली,
डाकघर व तहसील : बंगाणा,
जिला : ऊना (हि.प्र.)

3. अभिजीत कुमार — 10 वर्ष
गाँव : बंशीपुर,
पोस्ट : अमिलाई
जिला : चन्दौली (उ.प्र.)

4. लवकुश प्रजापति — 10 वर्ष
गाँव व पोस्ट : भुड़कुड़ा जखनियां,
जिला : गाजीपुर (उ.प्र.)

5. स्वर्णजीत — 13 वर्ष
सन्त निरंकारी सत्संग भवन,
सतनामपुरा, जिला : कपूरथला
(पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं—

मनीष शादिजा, सेजल वाधवानी,
अर्पिता वाधवानी, संजय तलरेजा
(तेलीबांधा, रायपुर),
समदृष्टि, सुनील (शालीमार बाग, दिल्ली),
स्नेहा वालिया (ठाकुरपुरा, अम्बाला),
वंशिका शादिजा (अवंती विहार, रायपुर),
हर्षित गुरुबक्षानी, खुशबू जेसवानी,
स्वाति वाधवा, प्रगति जेसवानी,
(रविग्राम, रायपुर),
श्रुति वाधवानी (तिल्दा, रायपुर)
व्यान ढींगरा (गोविन्दपुरा एक्स, दिल्ली),
सौरभ राज (विन्ध्यनगर, सिंगरौली),
गुरपाल (रेलवे कॉलोनी, बराड़ा),
विभोर (लक्खी कॉलोनी, बरनाला),
साक्षी (दाउदपुर, पटना),
प्रतिभा (गुरुग्राम),
प्रथम (हरदेव नगर, दिल्ली),
जिया (रानी बाग, दिल्ली),
सृष्टि (बगिपुल, कुल्लू),
समीक्षा (सुन्दर नगर, अजमेर),
मानवी (लहरागागा),
सिदक (उल्हास नगर),
यशनूर (सिहाली, बाजपुर),
महक (जूही लाल कॉलोनी, कानपुर)
स्वास्तिका (सिडको, नासिक)।

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 अप्रैल तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- ☆ पांच सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जून अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
- ☆ चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- ☆ 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री.....

पूरा पता : .....

.....पिन कोड.....

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं 'निरंकारी वेबसाइट' पर

निरंकारी वेबसाइट पर सभी भाषाओं की 'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' एवं 'एक नज़र' को पढ़ने के लिए इन निर्देशों का पालन करें–

www.nirankari.org को open करेंगे तो Main पेज पर आपको THE MISSION, ACTIVITIES, MEDIA and GALLERY दिखाई देंगे। आपको MEDIA के PUBLICATIONS option को क्लिक करना है। यहाँ आपको सम्पूर्ण अवतार बाणी, सम्पूर्ण हरदेव बाणी, E-BOOKS, Articles और Magazines दिखाई देंगे। Magazines को क्लिक करते ही सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र तथा Universal Target के पेज खुल जाएंगे। यहाँ आप जो भी पत्रिका पढ़ना चाहते हैं, पढ़ सकते हैं।

– प्रबन्ध सम्पादक, पत्रिका विभाग

पाठकों के लिए सूचना ...

क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

– प्रबन्ध सम्पादक

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,

निरंकारी कॉम्प्लेक्स, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

करने योग्य बातें

- ★ लेने के लिए कोई चीज है तो – ज्ञान
- ★ कहने के लिए कोई चीज है तो – सत्य
- ★ जीतने के लिए कोई चीज है तो – प्रेम
- ★ पीने के लिए कोई चीज है तो – क्रोध
- ★ रखने के लिए कोई चीज है तो – धैर्य
- ★ देने के लिए कोई चीज है तो – दान
- ★ दिखाने के लिए कोई चीज है तो – दया
- ★ रखने के लिए कोई चीज है तो – इज्जत
- ★ फेंकने के लिए कोई चीज है तो – ईर्ष्या
- ★ छोड़ने के लिए कोई चीज है तो – मोह

प्रस्तुति : प्रियंका तिवारी

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed dates 21st & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) - 23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

पाठकों से निवेदन

हिन्दी, पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा की निरंकारी पत्र-पत्रिकाओं: सन्त निरंकारी, एक नज़र तथा हँसती दुनिया के पाठकों से निवेदन है कि पत्र-पत्रिकाओं के रिकॉर्ड को अपडेट किया जा रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नं. और ई-मेल पत्रिका विभाग को

ई-मेल : sulekh.sathi@nirankari.org
और patrika@nirankari.org तथा

WhatsApp Mobile No. 9266629841
पर अतिशीघ्र भेजें ताकि आपका रिकॉर्ड update किया जा सके।

लेखकों के लिए

☞ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सन्त निरंकारी' विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें अनुभवी लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। अध्यात्म, साहित्य एवं समाज के रचनात्मक समन्वय का प्रयास भी इस पत्रिका द्वारा किया जाता है।

☞ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र 'एक नज़र' की विषय-वस्तु मुख्यतः दार्शनिक लेख, गहरे पानी पैठ, बाल जगत, ज्ञान-विज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक विभूति आदि हैं। इसके स्तर में सुधार तथा इसे और आकर्षक बनाने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

☞ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक 'हँसती दुनिया' में रोचक कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ सामग्री जैसे लेख, गीत, कहानी, कविताएं आदि केवल ई-मेलः sulekh.sathi@nirankari.org और editorial@nirankari.org पर ही भेजें ताकि आपकी रचनाओं को समयानुसार प्रकाशित किया जा सके।

—Sulekh 'Sathi'
Managing Editor, Magazine Department

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें